

करतारपुर दे कौतक (भाग -6)♦

1532 ई तों 1535/36 दियां साखियां

कच्चे धागे दा बद्धा, खिच्च्या चला आया भायी लहना

सताईआं सालां दा लहना पिंड खडूर विच हट्टी करदा है।♦ पड्या लिख्या होन करके इलाके विच माता दे जगराते वाले जथे दा मुखी वी है। लहने ने आपने पिता फेरू कोलों बाबे नानक बारे वी सुण्या होया है। इक दिन खडूर दा भायी जोध गुरू साहब दी बाणवी पडह रेहा हुन्दा है तां भायी लहना उतसुकता वस हो इस बानी बारे जानन दी कोशिश करदा है। बानी दे रहस्समयी बोल लहने विच जग्यासा होर भडका दिन्दे ने। भायी जोध लहने नूं गुरू नानक बारे उह गल्लां वी दस्सदा है जेहडियां पिता फेरू ने नही सन दस्सियां।

गल्ल चेत नवरात्यां (मारच 1532) दी है। जंमू-कटडे वाली भवनां वाली मां वैशनी देवी दा मेला है।♦ लहना वी मेले लई आपना संग लै के खडूर तों रवाना हो जांदा है। कुझ लोक घोड्यां ते ने ते बहुते पैदल। पहली रात चविंढा देवी मन्दर दी सरां विच कट्टे ने। अगला निशाना रावी दा कलानौर दे परगने दा पक्खोक्यां दा मशहूर पत्तन है।

लहने दा संग रवों रवी पत्तन दी लागली सरां विच पहुंच जांदा है।♦

संग रात दे खान पीन दा इंतजाम करदा है। घोड्यां वाले घाह पट्टे दा इंतजाम करदे हन।

लहना सरां दे बन्द्यां कोलों पुच्छ गिच्छ करदा है कि इथे किते सुणिए गुरू नानक दा डेरा है। बन्दे दस्सदे ने कि जी उह तां ऐन तुहाडे राह ते ही आ रावी दे उरले कंठे। (ओदों रावी पक्खोक्यां दे उत्तर विच वगदा सी।)

धक्क्या टट्टा लहना आपने संगियां नूं कहन्दा कि भाईयो मैं तां अराम करन लग्गां। मैं सवक्खते उठ बाबे नानक दा डेरा वेखना है तुसी मैनुं राह विचों लै ल्यो।

अगले मन्हेरे (पहु फुट्टन तों पहलां) लहना उठदा है। वाहो दाही घोड़े ते काठी सुट्टदा ते रवाना हो जांदा है।

गाडी राह है। लहना दस्सियां निशानियां मुताबिक रवां रवीं चलदा जा रेहा हुन्दा है।

सबब्बी इक बजुरग नजर आउदा है। राह दा उंज तां लहने नूं अन्दाजा हो ही गया सी पर फिर वी सोच्या कि इस बजुरग कोलो पुच्छ लैने आ।

लहना उस बजुरग दे कोल पहुंच बोल उठ्या, "बाबा जी इथे किते गुरू नानक दा डेरा दस्सीदै?"

बजुरग लहने नूं कहन्दा कि पुरखा! आ मेरे मगर मगर चलदा आ मैं वी ओथे ई जाना ए बेशक्क घोड़े दी वाग मैनुं ही फड्डहा दे।



देवी भगत भायी लहना भवनीं (वैशनी देवी) जांदा होया। (बी:40 तसवीर)

वाग फड्डह उह बजुरग घोड़े दे अग्गे अग्गे चलदा है। डेरे विच चल्ह रही आसा दी वार दी अवाज लहने नूं झंजोड़ी जा रही हुन्दी ए

डेरे पहुंच बजुरग बोल्या, "पुरखा! ओस किल्ले नाल घोड़े नूं बन्न, धरमसाल अन्दर आ जा।

बजुरग जिवें धरमसाल अन्दर पैर रक्खदा है सारी संगत सुचेत हो जांदी है, "बाबा आ गया!" गुरू साहब उच्चे थड़े ते आपने आसन ते बिराज जांदे ने।

लहना जिवें दीवान विच वड्डहदा है तां उंनूं झट्टका लग्गदा है जदों उह वेखदा कि राह दसेरा ओही बजुरग इथे सभा-पती है भाव खुद्द गुरू नानक ही है।

शरमसार होया लहना गुरू साहब दे चरन छूहदा है। "गुरू जी मैनुं माफ कर दो। मैं तुहानूं पछाण्यां नही सी। मैं गुनाहगार हां तुहानूं लग्गाम फडायी मैं खुद्द घोड़े ते चड्या आया।" गुरू साहब ने दिलासा दित्ता, "पुत्तरा कुझ गलत नही होया। सभ ठीक है।"

गुरू साहब दीवान तों बाहर आ जांदे ने मगरे मगर लहणा।

गुरू साहब अग्गो पुच्छदे ने पुरखा तेरा नां की है?

"जी मेरा नां लहणा।" लहना बोल्या।

गुरू साहब लहने नूं घुट्ट के गल नाल ला बोलदे ने

"पुरखा बुरा नां मना। शरमशार नां हो क्युकि लैणदार हमेशा घोड़ चडी ही आउदे ने। तूं इथों लैना है। तूं मै नूं फेरू बारे दस्स?"

बिनां सोचे लहना बोल उठ्या जी उहनां नूं तां चड्हायी कीत्यां 7 साल हो गए ने।

गुरू साहब ने होरनां सिक्खां बारे वी पुच्छ्या, "भायी जेठा, भायी तखत मल, मायी भिराई?"

लहना रवां रवी सभ दा हाल चाल दस्स रेहा सी। कुझ चिर जिवे गुरू साहब किसे होर गुरसिक्ख नाल गल करन लग्ग पए लहना दियां अक्खां खुल्लियां ते अहसास होया कि गुरू जी ल किवे पता कि मै फेरू त्रेहन दा मुंडा हां? लहने दा सिर चक्राय जांदा है।

लहने नूं भायी जेठे दी गल याद आ जांदी है कि गुरू साहब जानी जान ने।

गुरू साहब मुड़ दीवान विच जा बिराजदे ने।

दुद्ध छक्कन तों बाद लहना दीवान विच जिवे जांदा है गुरू साहब इशारा करके आपने कोल बहन लई कहन्दे ने।

रबाबी नूं हुकम हुन्दा है कि मलार दी धुन्न वजा।

गुरू साहब उच्ची सुर च शबद ला दिन्दे ने:

मलार महला 1 ॥ जिनि धन पिर का सादु न जान्या सा बिलख बदन कुमलानी ॥ भई निरासी करम की फासी बिनु गुर भरमि भुलानी ॥1॥ बरसु घना मेरा पिरु घरि आया ॥ बलि जावां गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आनि मिलायआ ॥1॥ रहाउ ॥ नउतन प्रीति सदा ठाकुर स्यु अनदिनु भगति सुहावी ॥ मुकति भए गुरि



भायी लहना ते होर माता दे भगत गुरू साहब दे चरनां ते।(बी:40 तसवीर ॥ इथे भायी मरदाने नूं वी दिखायआ गया है जो इतहासिक तौर ते गलत है।)

दरसु दिखायआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥2॥ हम थारे त्रिभवन जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ सतिगुरि मिलिए निरंजनु पायआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥3॥ अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ अकुल निरंजन स्यु सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥4॥ मुकति भई बंधन गुरि खोलें सबदि सुरति पति पायी ॥ नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलायी ॥5॥4॥

लहने ते वक्खरा ही सरूर चड्हा जांदा है। जीवन मनोरथ पूरा हो जांदा है। पता नही की हो गया, रूहानियत बारे जो थां थां ते सवाल कर द्या करदा सी ओह लहना हुन चुप्प सी, सारे सवाल मुक्क गए ने।

सवेर दे दीवान दा भोग पैदा है। दुद्ध ते लस्सी दा लंगर चल रेहा हुन्दा है।

लहने दा संग वी आ पहुंचदा है।

लंगर पानी छकन तों बाद पुच्छ गिच्छ हुन्दी है कि उनां दा संगी लहना इथे आया? लहने नूं बुलायआ जांदा है। संगियां कोल पहुंच लहना कहन्दा कि भरावो मेरी तां यातरा सम्पूरन पूरा हो गई जे। जिस कारन मै देवी दरशन नूं जाना सी उह मै नूं इथे ही हो गए ने। क्युकि लहने नूं ग्यान हो चुक्का सी इह देवी देवते सभ अकालपुरख निरंकार दे कीते होए ने।

बहुते संगी वी इथे ही रह जांदे ने पर कुझ इक आपना सफर जारी रखदे ने।

लहना गुरू नानक दा ही हो के रह गया।

—◆—

पिछमह ◆ **भाग-6 किवे?** 1. पहली उदासी तों परतन मौके (साल 43वां), 2. दूसरी उदासी तों वापसी ते (साल 49 वां), 3. करतारपुर भाव मुकाम दी सथापती (साल 52वां), 4. कौतक दे कौतक (साल 53वां), 5. कौतक दे कौतक (साल 56वां) अते 6. कौतक दे कौतक (साल 63वां)।

खडूर तों 5 कि. मी. चड्हादे पासे पिंड संघर विखे भायी लहने दे सहुरे सन। अज्ज इह पिंड बेचराग हो चुक्का है। लग्गदा है सिरफ खतरियां दे ही घर सन। हुन सिरफ इक शिवाला ही ओथे बच्या है। इलाके दे सूझवान लोकां ने लागले पिंड विच गुरुदुआरा माता खीवी नूं समरपत कीता होया है।

व कुझ लिखारिया ने जपुजी लिख्या कई लिखारियां आसा दी वार लिखी है।

◆ बी:40- 92 ने 1536 ई विच भायी लहने दा पहला मेल गुरू साहब नाल दस्स्या है। ग्यानी-304 भायी लहने दा मेल 1526 ई विच लिखदा है। पर सिक्खी दी प्रम्परा अनुसार मेल 1532 विच हुन्दा है। देखो महान कोश।

◆ बहुते लिखारियां ने भायी लहने दा जवाला जी (कांगड़ा) जाना लिख्या

है। पर भूगोल दे अनुसार इह गल दुक्कदी नही। पक्खोके खडूर तों वैशनों देवी दे राह विच पैदा है। वेखो नाल दिता नकशा। हां, जंमू दे इलाके विच इक झिड़ी नां दा मन्दर वी पंजाबी हिन्दू आं विच काफी मकबूल रेहा है। ब ने लिख्या है कि भायी लहना मते की सराय (सराय नागा) तों चल के जवाला जी जा रेहा सी। इह कथन वी गलत लग्गदा है क्युकि अगगे खुद्द ही खडूर परतन दा जिकर कर दिन्दा है। कहन तों मतलब 1531-2 ई तों पहलां ही भायी फेरू दा प्रवार खडूर हिजरत कर चुक्का सी। सोढी:2-66 ने वी भायी लहने दा भवन जाना ही लिख्या है। भवन सिरफ वैशनों देवी दे ही मन्ने जांदे हन।

◆ इस पत्तन लागे इक दो ज्यदा मुसाफिर सरावां सन। डेरा बाबा नानक तों 11 कि. मी. पूरब विच अज्ज वी 'निक्को सरां' नां दा पिंड मौजूद है। इह वी हो सकदा है लहने दा संग निक्को सरां ही रात रुक्या होवे।

भायी फेरू सराय नागा रहन्दा सी जिसदा नां ओहनी दिनी मते दी सराय सी। इस शहर तों कनिशक कलीन मिलदियां इट्टां तों पता लग्गदा है कि पुराने सम्यां च इह मशहूर शहर सी अते बुध धरम दा कोयी केंदर। मते दी सरां सुलतान पुर तों कोयी 90-95 किलोमीटर है।



ਚੋਣੀਏ ਤੂੰ ਕੀ ਸਮਝੇ ਇਹ ਚਿਕਕੜ ਹੈ ਕਿ ਕੇਸਰ?

1535/36ई. ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਦੀ
ਗਲ ਹੈ

ਹਫਤੇ ਕੁ ਬਾਦ ਦੇਵੀ ਦਾ ਸੰਗ
ਪਹਾੜਾਂ ਤੋਂ ਪਰਤਦਾ ਹੈ।
ਸੰਗੀ ਜੋਰ ਦਿੰਦੇ ਨੇ ਕਿ

'ਲਹਨੇ ਘਰ ਨੂੰ ਚਲ'। ਸੰਗਿਆਂ ਨੂੰ ਕੀ ਪਤਾ ਕਿ ਲਹਨਾ ਤਾਂ ਹੁਨ
'ਭਾਈ ਲਹਨਾ' ਬਧ ਚੁਕਕਾ ਹੈ। ਡੇਰੇ ਦਿਯਾਂ ਕੰਝ
ਜਿੰਮੇਵਾਰਿਆਂ ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਦੇ ਮੋਢਿਆਂ ਤੇ ਨੇ। ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਨੂੰ
ਕੰਮ ਯਾਦ ਆ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ਜੇਹੜੇ ਉਸ ਨੇ ਅਗਲੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ
ਕਰਨੇ ਨੇ। ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਸੰਗਿਆਂ ਨੂੰ ਕਹ ਦਿੰਦੇ ਨੇ ਕਿ ਮੇਰੇ ਘਰ
ਸੁਨੇਹਾ ਦੇ ਦੇਣਾਂ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਆਉਣ ਵਿਚ ਕੁਝ ਦਿਨ ਹੋਰ ਲਗ
ਸਕਦੇ ਨੇ। ਸੰਗ ਵਾਪਸੀ ਤੇ ਅਗੇ ਰਵਾਨਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਬਾਦ ਯ ਸਨਮੁਖ ਸਿਧਾਰਨ ਜਾਂ ਭਾਈ ਪਦਾਰਥ ਜਾਂ
ਭਾਈ ਬੁਠੇ ਵਰਗਾ ਕੋਈ ਹੋਰ ਸਿਕਖ ਜਦੋਂ ਡੇਰੇ ਵਿਚ ਹਾਜਰ
ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਕੋਲੋਂ ਖੜਕ
ਜਾਨ ਦੀ ਛੁਟੀ ਮੰਗਦੇ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਨੂੰ
ਛੇਤੀ ਪਰਤ ਆਉਣ ਦੇ ਭਰੋਸੇ ਉਪਰੰਤ ਇਜਾਜ਼ਤ ਦੇ ਦਿੰਦੇ ਨੇ।

ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਖੜਕ ਪਰਤਦੇ ਨੇ। ਮੁਕਾਮੀ ਗੁਰਸਿਕਖਾਂ ਨੂੰ
ਚਾਯ ਚੜ੍ਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਓਨਾਂ ਦੇ ਨਗਰ ਦੇ ਭਾਈ ਲਹਨੇ ਨੂੰ
ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦਾ ਥਾਪੜਾ ਹਾਸਲ ਹੋ ਚੁਕਕਾ ਹੈ। ਵੇਹਲੇ ਵੇਲੇ
(ਅਕਸਰ ਤਿਰਕਾਲਾ ਵੇਲੇ) ਖੜਕ ਦੇ ਸਾਰੇ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਲੇਵਾ
ਇਕੱਠੇ ਹੁੰਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ। ਇਕੱਠੇ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਵਧਦਾ ਹੀ ਜਾਂਦਾ
ਹੈ। ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰਮਤ ਸਿਧਾਂਤ ਸਮਝਾਉਂਦੇ
ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ।

ਭਾਦਰੋਂ ਅਸ਼ੂ (ਜੁਲਾਈ/ਅਗਸਤ) ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਜਾ ਕੇ ਫਿਰ
ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਪਰਤਦੇ ਨੇ। ਭੜੇ ਚਾਯ ਨਾਲ ਬੀਬੀ
ਖੀਵੀ ਨੇ ਨਵਾਂ ਚਿਟਾ ਜੋੜਾ ਪਵਾ ਕੇ ਭੇਜਿਆ ਸੀ। ਜਿਵੇਂ ਭਾਈ
ਸਾਹਬ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਦੀ ਹੜ ਵਿਚ ਗਏ ਤਾਂ ਪਤਾ ਲਗਾ ਕਿ
ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਖਾੜਿਆਂ ਵਿਚੋਂ ਨਦੀਨ ਕਢ ਰਹੇ ਨੇ। ਲਹਨਾ ਵੀ
ਨਾਲ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਸ਼ਾਮੀ ਫਿਰ ਨਦੀਨ (ਪਟੁਯਾਂ) ਦੀ ਪੰਡ ਚੁਕਕ ਕੇ ਜਿਵੇਂ ਭਾਈ
ਲਹਨਾ ਡੇਰੇ ਪਹੁੰਚਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਾਤਾ ਸੁਲਕਖਨੀ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਪੈ
ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਦੇ ਚਿਟੇ ਕਪੜਿਆਂ ਤੇ ਭਰੀ ਵਿਚੋਂ
ਚਿਕਕੜ ਚੋਯ ਰੇਹਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮਾਤਾ ਜੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ
ਗੁਸੇ ਹੁੰਦੇ ਨੇ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਵੇਖਿਆ ਤਾਂ ਕਰੋ ਅਗਲਾ ਨਵੇਂ ਕਪੜੇ
ਪਾ ਕੇ ਆ ਹੀ ਰੇਹਾ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਰਸਤੇ ਵਿਚ ਹੀ ਪੰਡ
ਚੁਕਕਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਚਿਟੇ ਕਪੜੇ ਤੋਂ ਇਹ ਦਾਗ ਨਹੀਂ ਨਿਕਲੇਗਾ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਕੇਹਾ ਕਿ ਚੋਣੀਏ ਤੈਨੂੰ ਕੀ ਪਤਾ ਕਿ
ਇਹ ਚਿਕਕੜ ਹੈ ਕਿ ਕੇਸਰ? ਮਾਤਾ ਚੁੱਪ ਹੋ ਗਈ। ਹੌਲੀ
ਜੇਹੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ ਚੋਣੀਏ ਇਹ ਭਰੀ ਨਹੀਂ ਇਹ ਤਾਂ
ਲਹਨੇ ਸਿਰ ਚਲਾ ਹੈ ਤੇ ਦੂਸਰਾ ਇਹ ਚਿਕਕੜ ਨਹੀਂ ਕੇਸਰ ਪੈ
ਰੇਹਾ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਬੋਲਿਆ:-

ਪ੍ਰਭਾਤੀ ਮਹਲਾ 1 ॥ ਇਕਿ ਧੁਰਿ ਬਖਸਿ ਲਏ ਗੁਰਿ ਪੂਰੈ ਸਚੀ
ਬਨਤ ਬਧਾਯੀ ॥ ਹਰਿ ਰੰਗ ਰਾਤੇ ਸਦਾ ਰੰਗੁ ਸਾਚਾ ਦੁਖੁ ਬਿਸਰੇ
ਪਤਿ ਪਾਯੀ ॥1॥ ਝੁਠੀ ਦੁਰਮਤਿ ਕੀ ਚਤੁਰਾਯੀ ॥ ਬਿਨਸਤ
ਬਾਰ ਨ ਲਾਗੈ ਕਾਯੀ ॥1॥ ਰਹਾਉ ॥ ਮਨਮੁਖ ਕਉ ਦੁਖੁ
ਦਰਦੁ ਵਪਾਸਿ ਮਨਮੁਖਿ ਦੁਖੁ ਨ ਜਾਯੀ ॥ ਸੁਖੁ ਦੁਖੁ ਦਾਤਾ
ਗੁਰਮੁਖਿ ਜਾਤਾ ਮੇਲਿ ਲਏ ਸਰਧਾਯੀ ॥2॥ ਮਨਮੁਖੁ ਤੇ ਅਭ
ਭਗਤਿ ਨ ਹੋਵਸਿ ਹਉਮੈ ਪਚਹੁ ਦਿਵਾਨੇ ॥ ਇਹੁ ਮਨੁਆ ਖਿਨੁ
ਊਭਿ ਪਯਾਲੀ ਜਬ ਲਗਿ ਸਬਦੁ ਨ ਜਾਨੇ ॥3॥ ਮੁਖੁ ਪਿਆਸਾ
ਜਗੁ ਭਯਾ ਤਿਪਤਿ ਨਹੀ ਬਿਨੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਪਾਏ ॥ ਸਹਜੈ ਸਹਜੁ
ਮਿਲੈ ਸੁਖੁ ਪਾਇਏ ਦਰਗਹੁ ਪੈਠਾ ਜਾਏ ॥4॥ ਦਰਗਹੁ ਦਾਨਾ
ਬੀਨਾ ਇਕੁ ਆਪੇ ਨਿਰਮਲੁ ਗੁਰੁ ਕੀ ਬਾਨੀ ॥ ਆਪੇ ਸੁਰਤਾ ਸਚੁ
ਵੀਚਾਰਸਿ ਆਪੇ ਭੁਝੈ ਪਦੁ ਨਿਰਬਾਨੀ ॥5॥ ਜਲੁ ਤਰੰਗੁ ਅਗਨੀ
ਪਕਨੈ ਫੁਨਿ ਤ੍ਰੈ ਮਿਲਿ ਜਗਤੁ ਉਪਾਯਾ ॥ ਏਸਾ ਬਲੁ ਚਲੁ
ਤਿਨ ਕਉ ਦਿਯਾ ਹੁਕਮੀ ਠਾਕਿ ਰਹਾਯਾ ॥6॥ ਏਸੇ ਜਨ
ਵਿਰਲੇ ਜਗੁ ਅਨੰਦਰਿ ਪਰਖਿ ਖਜਾਨੈ ਪਾਯਾ ॥ ਜਾਤਿ ਵਰਨ
ਤੇ ਭਏ ਅਤੀਤਾ ਮਮਤਾ ਲੋਭੁ ਚੁਕਾਯਾ ॥7॥ ਨਾਮਿ ਰਤੇ
ਤੀਰਥੁ ਸੇ ਨਿਰਮਲੁ ਦੁਖੁ ਹਉਮੈ ਮੈਲੁ ਚੁਕਾਯਾ ॥ ਨਾਨਕੁ
ਤਿਨ ਕੇ ਚਰਨੁ ਪਖਾਲੈ ਜਿਨਾ ਗੁਰਮੁਖਿ ਸਾਚਾ ਭਾਯਾ ॥8॥
ਭਾਈ ਸਾਹਬ ਭਰੀ ਟੋਕੇ ਅਗੇ ਸੁਟੁ ਆ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੇ
ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਫਹ ਪਏ, "ਗੁਰੂ ਜੀ ਹਉਮੈ ਤੋਂ ਬਚਾ ਲਏ। ਤੇਰੇ
ਚਰਨ ਪਰਸਦਾ ਹੀ ਰਹਾਂ।"

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਭਾਈ ਲਹਨੇ ਨੂੰ ਫਿਰ ਗਲ ਲਾਯਾ, "ਨਹੀ
ਪੁਰਖਾ! ਘਾਨੀ ਨੂੰ ਹਉਮੈ ਰੋਗ ਨਹੀਂ ਪੋਹਦਾ।"

—◆—

ਬਾਬੇ ਨੂੰ ਘਰ ਆਯਾ ਵੇਖ, ਮੂਲਾ ਗਹੀਰੇ ਵਿਚ ਲੁਕ ਗਯਾ

ਸ਼ਾਲਕੋਟ ਦੇ ਮੂਲ ਰਾਜ ਨਾਂ ਦੇ ਬਾਘੀਏ ਦੀ ਰੂਹਾਨਿਯਤ ਵਿਚ
ਵਡੀ ਦਿਲਚਸਪੀ ਸੀ, (ਵੇਖੋ ਹਮਝਾ ਗੈਸ ਵਾਲੀ ਸਾਖੀ)।
ਮੂਲੇ ਦੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨਾਲ ਨੇੜਤਾ ਹੋਰ ਵੀ ਵਧ ਗਈ ਸੀ।

ਫਿਰ ਮੂਲਾ ਆਪਣਾ ਘਰ ਬਾਰ ਟਿਆਗ, ਆਪਣੀ ਹੱਟੀ ਦੀ ਪ੍ਰਵਾਹ
ਕੀਤੇ ਬਿਨਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨਾਲ ਆ ਰਲਿਆ। ਜਿੰਦ ਕੀਰੀ ਕਿ
ਮੈਂ ਵੀ ਉਦਾਸੀ ਵੇਲੇ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਰਕਖੋ। ਇਹ ਜੰਮੂ
ਭਦਰਵਾਹ, ਚੰਬਾ ਉਦਾਸੀ ਦਾ ਮੌਕਾ ਸੀ। ਮੂਲੇ ਨੇ ਲਿਬਾਸ ਵੀ
ਫਕੀਰਾਂ ਵਾਲਾ ਪਾ ਲਿਆ ਸੀ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਸ਼ਾਲਕੋਟ ਤੋਂ ਉਪਰ ਦੇ ਨੇੜੇ ਤੇੜੇ ਘੁੰਮਦੇ ਘੁੰਮਾਂਦੇ
ਜਦੋਂ 20- 25 ਦਿਨਾਂ ਬਾਦ ਜੰਮੂ ਤੋਂ ਉਤਲੇ ਇਲਾਕੇ ਵੇਖ ਰਹੇ
ਸਨ ਤਾਂ ਓਦੋਂ ਤਕਕ ਮੂਲੇ ਦਾ ਮਨ ਉਦਾਸੀ ਤੋਂ ਅਕਕ ਗਿਆ
ਸੀ। ਹਾਰ ਕੇ ਇਕ ਦਿਨ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਅਗੇ ਰੋ ਪਿਆ ਕਿ ਬਾਬਾ
ਜੀ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਇਹ ਕਠਿਨ ਉਦਾਸੀ ਜਾਰੀ ਰਕਖ ਸਕਦਾ। ਭਾਈ
ਮਰਦਾਨੇ ਨੇ ਮੂਲੇ ਦਾ ਇਸ ਗਲ ਤੇ ਮਖੌਲ ਵੀ ਉਡਾਯਾ ਕਿ
ਇਹਨੂੰ ਵਹੁਟੀ ਦੀ ਯਾਦ ਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਪਰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਮੂਲੇ
ਨੂੰ ਥਾਪੀ ਦਿੱਤੀ ਤੇ ਲਹੌਰ ਵਲ ਜਾ ਰਹੇ ਕਾਫਲੇ ਨਾਲ ਮੂਲੇ ਨੂੰ
ਵਾਪਸ ਭੇਜ ਦਿੱਤਾ।

ਚੌਥੀ ਉਦਾਸੀ ਤੋਂ ਵਾਪਸ ਪਰਤ ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ
ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਰਹਿੰਦਾ ਕੋਈ ਸਾਲ ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਹੋ ਗਏ ਸਨ ਤਾਂ
ਸਾਹਬ ਦਾ ਮਨ ਸ਼ਾਲਕੋਟ ਦੇ ਇਲਾਕੇ ਦਾ ਦੌਰਾ ਕਰਨ ਦਾ
ਹੋਯਾ। ਏਤਕਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਭਾਈ ਲਹਨਾ ਪਿੱਛੇ



मूला रानी बोली, "बाबा जी उह तां घर हैनीगे। तुसी फिर किसे वेले आ जायओ।" (बी:40 तसवीर। इथे फिर भायी मरदाने नूं गलती नाल दिखायआ गया है।

करतार पुर साहब दा इंतजाम वेख रेहा सी। गुरू साहब नाल इक दो होर सिक्ख सन।

गुरू साहब ने फिर साधु फकीरां वाला लिबास पायआ सी। पहरावा वी अजेहा कि कोयी पछान नां सके कि इह हिन्दू सन्न्यासी कि मुसलमान फकीर। इक पैर विच लकड़ दी खड़ां ते दूसरे पैर विच चंम दी जुती (खोसा जां काउंस) तेड़ नीले रंग दा पजामा ते उते भगवे रंग दी चादर। सिर दे वालां ते उच्चा टोप पा ल्या ते नाले मत्ये तिलक वी ला ल्या। लगा लोकायी नूं नाम दान इशनान दा सिधांत द्रिडावन।

इक दिन तरकालां जेहे दा वेला सी कि गुरू साहब साधियां नूं कहन लागे चलो अज्ज आपने बेलीं मूले दे घर ही रात गुजारदे हां।

मूले दे घर पहुंच जिवे दरवाजा खड़कायआ तां अन्दरो मूले दी जोरू ने झीत थांनी बाहर झाक्यां तां मुड़दे पैरी अन्दर आ के मूले नूं कहन लागी, "उह तेरा नानक फिर आ गया ई ऐतकां तां ज्यादा ही फटे हाल लग्गे रेहा है। कोयी वगार पाउगा, तूं किते लुक जा।"

मूला झट्ट पाधियां वाले गहीरे विच जा वड़्या।

मूला-रानी ने फिर आ दरवाजा खोल्या ते गुरू साहब नूं कहन लागी "जी उह (मूला) तां ऐस वेले घर नही। मूले-रानी ने नां ही कोयी 'आयो, बैठो, रोटी पाणी' पुच्छ्या।

गुरू साहब सहज सुभाआ बोल उठे - "नालि किराडा दोसती कूड़े कूड़ी पाय ॥ मरनु न जापै मूल्या आवै किते थाय ॥21 ॥

गुरू साहब वापस पीर दे कोल आ गए।

इक अद्धे पहर बाद सिक्ख की वेखदे हन कि मूले नूं मंजे ते पायआ होया, मूले दे साक संबंधी आ गुरू साहब कोल अरज गुजारी, "बाबा जी आपने सेवक नूं बचा लओ!"

शरमिन्दा होया मूले दा टब्बर मूह लुका के रो रेहा सी। साक संबंधियां अते मुहल्ले दे मोहतबर सज्जणां गुरू साहब दा वासता पायआ कि मूले ते तरस करदे होए इहदी जान बचा लई जाए। ओनां इकबाल कीता कि गुरू जी जदों तुसी मूले दे घर गए तां इहदी घरवाली ने तुहाडे अग्गे झूठ बोल्या सी कि मूला घर नही है। दर असल मूला घरे ही सी ते तुहाडे आउन ते गहीरे विच लुक गया सी ते पाधियां विचों निकल के इक फनियार सप्प ने इस नूं डस्स ल्या है। गुरू साहब तक पहुंचन तक ज़हर पूरा असर कर चुक्का सी। मूले विचों साह प्रान जा चुक्के सन।

गुरू साहब ने सिर फेर दित्ता ते प्रवार नूं भाने विच रहन दा उपदेश दित्ता। गुरू साहब ने फिर वी मूले दे सिर ते हथ फेर्यां ते असीस दित्ती कि "निरंकार तेरी 84 कट्ट के आपने चरनां विच निवास बखशेगा। तेरे सभ गुनाह माफ करेगा।" प्रवार नूं वी हौसला दित्ता कि कोयी पछचाताप नही करनां जो होया अकाल पुरख दे हुकम विच होया है।



बाबा जी मुकती दा राह केहड़ा है - साधूआं पुच्छ्या

करतारपुर

इक दिन सन्न्यासी साधूआं दी डार फिर करतारपुर आ उतरी। गुरू साहब ने सेवादारां नूं पहलां ही हुकम कीता होया सी कि आए साधूआं नूं इछा अनुसार इसनान कराउन तों बाद लंगर पानी छकायआ जाए ते इनां दे अराम करन दा प्रबंध कीता जावे।

दर असल सेवादारां ने वेख्या सी कि हर वारी साधूआं नूं वेख गुरू साहब दा हिरदा बड़ा खुश हुन्दा सी। फिर सेवादारां पुच्छ ल्या कि बाबा जी तुसी ऊच नीच गरीब अमीर सभ नूं इक नजर नाल वेखदे हो पर साधूआं नूं वेख तुहानूं क्यो चाय चड़ह जांदा है।

गुरू साहब ने सेवादार नूं समझायआ कि वेखो साधू लोक चाहे ठीक मारग ते हन जां गलत ते इनां ने आपना जीवन निरंकार दी खोज ते लायआ है। घर घाट रिशते नाते सभ त्यागे हन। इन्हां नाल मेरी हमदरदी ज्यादा है। वेखो नां इथे करतारपुर विखे लोकां दी किन्नी भीड़ लगगी रहन्दी है। कोयी इथे मुंडे लभ्मदा है, कोयी रिजक लभ्मदा है, कोयी दुद्ध ते पुत्त दोवे मंगदा है, कोयी रोग तो छुटकारा चाहन्दा है, कोयी कहन्दा मैं गरीबी तों बहुत तंग हों। पर इक साधू लोक ने जेहड़े जीवन दे सच्च दी खोज विच ने। गुरू साहब ने हमदरदी जितायी कि विचारे साधू कई अजेहे सम्परदावां विच वी ने जित्ये निरंकार अकाल पुरख बारे बड़े भुलेखे ने। अनेकां मड़ियां, मसाणां, योनी, पत्थर आदि नूं पूजी जा रहे ने। कई समझदे हन कि सरीर नूं कशट देन नाल मुकती मिलदी है।

अराम करन उपरंत साधूआं ने दीवान विच हाजरी भरी। ओथे जग्यासू गुरू साहब नूं तरां तरां दे सवाल करदे ते गुरू साहब बखशशां दे मीह वराउंदे। आए साधूआं ने वी फिर 'जीवन दा सभ तों वड्डा सवाल' कर दित्त। इक साधू उठ्या ते अरज कीती कि गुरू साहब जी असी सुणिए कि तुसी वक्खरा ही राह चला रहे हो। किरपा करके दस्सो कि तुहाडी विचारधारा अनुसार मुकती दा साधन की है?

गुरू साहब ने बड़ी ही हलीमी नाल जवाब दित्त कि गुरमत अनुसार मुकती दा राह कोयी गुंजलदार झंमेला नहीं है। असी मरन तों बाद मुकती दी गल नहीं करदे। बस असी इह दस्सदे हां कि जीदे जी मुकत किवे होना है: दुक्खां तकलीफां तों सुरखरू होणा। राह वी बड़ा ही सिद्धा पद्धरा है कि बस आपनी हऊमे छड्डु द्यो भाव काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तों अजादी हासल कर लवो।

साधू अगो हस्स प्या, "यह मुशकल ही नहीं, असंभव है।"

गुरू साहब ने केहा कि इस तों छुटकारा ग्यान नाल मिलदा है। जरूरी नहीं कि हऊमे किसे भेख विच आ घटे। गुरू दा शबद इस विच सहायी हुन्दा है। बस नाम जपे भाव मालक दे गुन गाए। जित्रां चिर बन्दे दी हऊमै नहीं मुकदी उह मुकती मारग नहीं पा सकदा। उनूं मौत दे भैय तों अजाद होना पवेगा। उनूं जीवन दी सच्चायी समझनी पवेगी।

साधू धन्न धन्न बोल उठे।

गुरू साहब गउड़ी विच शबद उचार्या ते संगत नाल रल गायआ:-

गउड़ी महला 1 ॥ हउमै करत भेखी नहीं जान्या ॥ गुरमुखि भगति विरले मनु मान्या ॥1॥ हउ हउ करत नहीं सचु पाईए ॥ हउमै जाय परम पदु पाईए ॥1॥ रहाउ ॥ हउमै करि राजे बहु धावह ॥ हउमै खपह

जनमि मरि आवह ॥2॥ हउमै निवरै गुर सबदु वीचारे ॥ चंचल मति त्यागै पंच संघारे ॥3॥ अंतरि साचु सहज घरि आवह ॥ राजनु जानि परम गति पावह ॥4॥ सचु करनी गुरु भरमु चुकावै ॥ निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥5॥ हउ हउ करि मरना क्या पावै ॥ पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥6॥ जेती है तेती केहु नाही ॥ गुरमुखि ग्यान भेटे गुन गाही ॥7॥ हउमै बंधन बंधि भवावै ॥ नानक राम भगति सुखु पावै ॥8॥13॥

—♦—

जदों वगग नूं हिक्कदे पाली नूं वेख ही

गुरू साहब विसमाद विच आ गएय

गुरदासपुर अमृतसर जिले दे कसब्यां दौरांगला, कलानौर, डेरा बाबा नानक, रमदास, अजनाला दे लाग्यों किरन जां सक्की नाला जांदा है ते नाल नाल ही कल्लर बंजर जमीन दी 2-3 कि. मी चौड़ी पट्टी चलदी है जो लगातार पाकिस्तानी इलाके विच ननकाना साहब तों वी अगगे निकल जांदी है। इस शोर-कल्लर पट्टी विच सिरफ दब्ब नां दा घाह ही पैदा हुन्दा सी। (उंज अज्ज कल रसायनक दवाईआं पा के इस कल्लर भूमी नूं उपजाऊ बना ल्या गया है) इस बेअबाद जमीन नूं सिरफ चरांद दे तौर ते ही वरत्या जांदा सी। इस दी मौजूदगी करके फिर कई अमीर लोकां ने मइझां गावां दे वड्डे वड्डे वगग रक्खे हुन्दे सन। साडे कलानौर विच हन तों कोयी 40-50 वरे पहलां तक इह वगग जित्रां नूं चौने कहन्दे हन मौजूद सन।

एसे तरां गुरू साहब दे वेल्यां च ठेठरके/धरमकोट रंधावा दे किसे जगीरदार दे चौने विच हजारां गाईआं सन। इक वेरां करतारपुर साहब वल जदों गुरू साहब परत रहे सन तां रसते विच गाईआं दा इह वगग गुरू साहब ने वेख ल्या जिस नूं सिरफ इक पाली संभाल रेहा सी। पाली उनां नूं इकट्टियां करके दर्या ते लै के जांदा है। पानी डाहुन्दा है। बघ्याड जेहे शिकारियां तों गाईआं नूं बचा के रक्खदा है। कदी कोयी गुसताख गायी पाली नूं मारन वी आउदी है। उनूं डंडे पैदे हन। कोयी मसत होया वैहडा वगग च बाहर दौड़ जांदा ते शिकारियां दे वस्स पैदा है।

इह वेख गुरू साहब नूं पालणहार करतार दा ध्यान आ जांदा है। किवे उह सानूं सारे जीवां नूं पाल रेहा है। असी उहदियां गाईआं ते उह साडा पाली। पर असी गुसताख मूरख लोक उहदी रजा भन्न के आप मुहारे हो चलदे ते दुख पाउदे हां। बाबा उथे ही विसमादित हो उठदा है। फिर वैरागमयी शबद गउड़ी राग विच रचदा है। शबद फिर भरे दीवान धरमसाल विच संगत दी शमूलियत नाल गुरू साहब गाउदे ने।

गउड़ी बैरागनि महला 1 आं सतिगुर प्रसादि ॥

ज्यु गायी कउ गोइली राखह करि सारा ॥ अहनिशि पालह राखि लेह आतम सुखु धारा ॥1॥ इत उत राखहु

दीन दयाला ॥ तउ सरणागति नदरि नेहाला ॥1॥ रहाउ
॥ जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ तूं दाता
भुगता तूहै तूं प्रान अधारा ॥2॥ किरतु पया अध ऊरधी
बिनु ग्यान बीचारा ॥ बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न
अंधारा ॥3॥ जगु बिनसत हम देख्या लोभे अहंकारा ॥
गुर सेवा प्रभु पायआ सचु मुकति दुआरा ॥4॥ निज घरि
महलु अपार को अपरम्परु सोयी ॥ बिनु सबदै थिरु को
नही बूझै सुखु होयी ॥5॥ क्या लै आया ले जाय क्या
फासह जम जाला ॥ डोलु बधा कसि जेवरी आकासि
पताला ॥6॥ गुरमति नामु न वीसरे सहजे पति पाईए ॥
अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईए ॥7॥ नदरि
करे प्रभु आपनी गुन अंकि समावे ॥ नानक मेलु न
चूकयी लाहा सचु पावे ॥8॥1॥17॥

इस शब्द ते फिर चरचा छिड़दी है। कई गुरमुख प्यारे
तरां तरां दे सवाल करदे हन कि साडे जीवां दा वग नाल
मुकाबला किवे हो गया। इनसान नूं तां करतार ने माड़ा
चंगा सोचन लई दिमाग दित्ता है। पर गाईआं तां आपना
माड़ा चंगा नही सोच सकदियां।

गुरू साहब ने फिर होर वी जोर दे के केहा कि नही सानूं
सील गाईआं दी तरां ही वेहार करनां चाहीदा है।
करतार दी रजा विच रहीए। इहो चडहदी कल्हा दा
असूल है। इस विच रता झूठ नही। जदों तुसी सच्च विच
चलागे तां सुखी रहोगे। गुरमुख गुरमत्त दे गाडी राह ते
सबर संतोख नाल चलदा होया गुरबानी रूपी अमृत
पींदा होया रता नां डोले। हर थां हर जीव विच निरंकार
दे रूप दे दरशन करे। याद रहे गुरमत दा निरंकार
आपनी रचना राही साकार रूप विच है।

◆ साहब ने गउड़ी विच शब्द केहा:-

गउड़ी महला 1 ॥ बोलह साचु मिथ्या नही रायी ॥
चालह गुरमुखि हुकमि रजायी ॥ रहहू अतीत सचे
सरणायी ॥1॥ सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥ मनमुख
कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥1॥ रहाउ ॥ अप्यु पियउ
अकथु कथि रहीए ॥ निज घरि बैसि सहज घरु लहीए ॥
हरि रसि माते इहु सुखु कहीए ॥2॥ गुरमति चाल
नेहचल नही डोले ॥ गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥
पीवै अमृतु ततु विरोलै ॥3॥ सतिगुरु देख्या दीख्या
लीनी ॥ मनु तनु अरप्यो अंतर गति कीनी ॥ गति मिति
पायी आतमु चीनी ॥4॥ भोजनु नामु निरंजन सारु ॥
परम हंसु सचु जोति अपार ॥ जह देखउ तह एकंकारु
॥5॥ रहै निरालमु एका सचु करनी ॥ परम पदु पायआ
सेवा गुर चरनी ॥ मन ते मनु मान्या चूकी अहं भ्रमनी
॥6॥ इन बिधि कउनु कउनु नही तार्या ॥ हरि जसि संत
भगत निसतार्या ॥ प्रभ पाए हम अवरु न भार्या ॥7॥
साच महलि गुरि अलखु लखायआ ॥ नेहचल महलु नही
छायआ मायआ ॥ साचि संतोखे भरमु चुकायआ ॥8॥
जिन कै मनि वस्या सचु सोयी ॥ तिन की संगति गुरमुखि
होयी ॥ नानक साचि नामि मलु खोयी ॥9॥15॥

"बाबा जी लोकां मेरा मखौल उडायआ" गुरसिक्ख ने शकायत लाई

करतारपुर

इक दिन करतारपुर साहब विखे इक ब्राहमन
गुरसिक्ख आपने साथियां नाल हाजर होया। उह
आपना तजरबा गुरू साहब कोल ब्यान कर रेहा सी।
उहदा कहना सी कि इक दिन मैं आपने धारमिक
साथियां नाल जदों गुरू दी अहमियत ते गल चलायी तां
मेरा खूब मखौल उडायआ गया। अगले कह रहे सन
कि बिनां करम कांड प्रभु दी प्रापती किवे संभव हो
सकदी है? उह ताहने दे रहे सन कि की विदवानां दियां
हजारां साल पहलां कहियां गल्लां झूठियां हो गईआं ते
तेरा गुरू सच्चा हो गया?

गुरू साहब ने उस गुरसिक्ख नूं केहा कि दुनिया दा की
है। दुनियां तां उलट पासे ही जांदी है। इह लोक की
समझन कि निरंकार प्रभु हर हिरदे विच वसदा है, इह
उनुं जंगलां विच दस्सदे नै। इनां अकलो अत्रे लोकां बारे
की केहा जा सकदा है। इह नकली चीज नूं दौड़ के पैदे
ने ते असली वल तकदे वी नही। कल जुग दी हालत
कुझ इहो जेही बनी कि अक्खो अत्रा बन्दा अज्ज पारखू
कहा रेहा है। जेहड़ा पुरख ग्यानवान है भाव जिन्नू जीवन
दी असलियत दी खबर लग्ग चुककी उनुं इह लोक मूरख
कहन्दे नै। जिस इनसान ने प्रभु दा भेद पा ल्या इनां
वासते उह मर गया अते जेहड़ा मायआ दी दौड़ विच
बन्दा प्या उह इनां वासते जागदा है। जेहड़ा धन्न नेक
कंम वासते लग्ग गया इहनां वासते तां उह विअर्थ हो
गया। इनां नूं बिगानियां चंगियां लग्गदियां ते आपनी दी
कदर नही। जेहड़ा असल मिट्टा इनां वासते उह कौड़ा
हो जांदा है। जेहड़ा प्रभु रंग विच रंग्या गया उहदी इह
निन्दा करदे नै। मायआ करतार दे हुकम विच है इह
मायआ दी तां पूजा करदे ने पर करतार वल तकदे वी
नही। पानी नूं रिड़कन वाले इनां लोकां बारे की केहा
जाए।

गुरू साहब ने इस प्रकार उस ग्यानवान ब्राहमन
गुरसिक्ख नूं दुनियां दी असल तसवीर विखा दिती।
साहब ने फिर शब्द बोल्या:-

गउड़ी महला 1 ॥ गुर परसादी बूझि ले तउ होइ
निबेरा ॥ घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥1॥
बिनु गुर सबद न छूटीए देखहु वीचारा ॥ जे लख करम
कमावही बिनु गुर अंधारा ॥1॥ रहाउ ॥ अंधे अकली
बाहरे क्या तिन स्यु कहीए ॥ बिनु गुर पंधु न सुझयी
कितु बिधि निरबहीए ॥2॥ खोटे कउ खरा कहै खरे
सार न जानै ॥ अंधे का नाउ पारखू कली काल विडानै
॥3॥ सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥ जीवत
कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥4॥ आवत कउ जाता
कहै जाते कउ आया ॥ पर की कउ अपुनी कहै अपुनो

नही भायआ ॥5॥ मीठे कउ कउड़ा कहै कडुए कउ
मीठा ॥ राते की निन्दा करह ऐसा कलि मह डीठा ॥6॥
चेरी की सेवा करह ठाकुरु नही दीसे ॥ पोखरु नीरु
विरोलीए माखनु नही रीसे ॥7॥ इसु पद जो अरथाय
लेइ सो गुरू हमारा ॥ नानक चीनै आप कउ सो अपर
अपारा ॥8॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमायआ
॥ गुर किरपा ते बूझीए सभु ब्रहमु समायआ
॥9॥2॥18॥

इह सभ सुन के ग्यानवान बन्दे दे मूहो कुदरती तौर ते
फिर इहो निकलना सी कि तूं धन्न है बाबा नानका।

—◆—

बाबे ने फिर घरवाली प्रथाय ही बानी कह दिती ◆

करतारपुर

इह गल्ल 1518-20 ई दे लागे चागे दी लगदी है।

लगदौ बीबी जी (माता सुलक्खनी / घुंमी चोणी) जो हुन
बहुत दुबली पतली हो गए हन गुरू साहब नूं ताहने
मारदे हन कि तेरे पिच्छे मैं जवानी गाल लई। जवानी दा
जोबन ढल्ल के हुन बुढापा आ चुक्का है। छाती सुक्क
चुक्की है। जवानी वेले दे शिंगार दे शौक वी पूरे नही
होए। तेरा राह तकद्यां तकद्यां अक्खां वी पक्क
चुक्कियां ने। पती तों बगैर घर काहदा? बस सबर
संतोख दा घुट्ट पी के जिन्दगी कडू दिती है। चलो फिर
वी मन दी इछा पूरी हो गई है तूं आखिर मेरे वल परत
आया है॥

पतनी कोलों इहो जेहे जदों ताहने सुने तां गुरू साहब दा
आपने पती (रब्ब) वल ध्यान चला गया ते अजेहा वैराग
छुट्टया कि पती दे प्रेम विच छन्द कह दिते। पर गुरू
साहब शुकुरगुजार हो रहे ने कि उहनां दा पती गुरू
साहब नूं कदी नही विसारदा। जदों उहनूं याद करदे ने
उह नाल हुन्दा है। उह तां सदा ही जवान है। रोज ही
नवां नकोर। गुरू साहब दा ता रोज मेल हुन्दा है।

ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ रागु गउड़ी
पूरबी छंत महला 1 ॥ मुंथ रैनि दुहेलड़िया जीउ नीद न
आवै ॥ सा धन दुबलिया जीउ पिर कै हावै ॥ धन धीयी
दुबलि कंत हावै केव नैनी देखए ॥ सीगार मिठ रस भोग
भोजन सभु झुठु कितै न लेखए ॥ मै मत जोबनि गरबि
गाली दुधा थनी न आवए ॥ नानक सा धन मिलै मिलायी
बिनु पिर नीद न आवए ॥1॥ मुंथ निमानडिया जीउ
बिनु धनी प्यारे ॥ क्यु सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥ नाह
बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलिया ॥ बिनु नाम
प्रीति प्यारु नाही वसह साचि सुहेलिया ॥ सचु मनि
सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाण्या ॥ नानक नामु
न छोडै सा धन नामि सहजि समाणिया ॥2॥ मिलु सखी
सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ गुर पुछि लिखउगी जीउ
सबदि सनेहा ॥ सबदु साचा गुरि दिखायआ मनमुखी
पछुताणिया ॥ निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु

पछाण्या ॥ साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु
नवेलयो ॥ नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी
सहेलीहो ॥3॥ मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु
आया ॥ मिलि वरु नारी मंगलु गायआ ॥ गुन गाय मंगलु
प्रेमि रहसी मुंथ मनि ओमाहयो ॥ साजन रहंसे दुसट
व्यापे साचु जपि सचु लाहयो ॥ कर जोडि सा धन करै
बिनती रैनि दिनु रसि भिन्निया ॥ नानक पिरु धन करह
रलिया इछ मेरी पुन्निया ॥4॥1॥

—◆—

जिवे शिकार चोगा लैन दे लालच विच फसदे, ऐन इहो हालत बन्दे दी है ◆

गल करतारपुर दी है। धरमसाल विच कुझ लंगोटबन्द
साधु ठहरे होए सन। गुरू साहब साधुआं नूं नाल लै के
रावी दर्या वल निकल गए। दर्या कंढे गए ते की वेखदे
हन इक झीवर मच्छियां फड़ रेहा है। पहलां उह जाल
विछाउदा है ते फिर मच्छियां लई जाल दे उते जेहे
करके कोयी चोगा सुट्टदा है। मच्छियां दौड़ियां
आउदियां हन। जदों वड्डी गिणती विच चोगा चुक्क
रहियां हुन्दियां हन तां माछी जाल चुक्क लैदा है ते कंढे
ते ल्या मच्छियां नूं फड़ह बोरी विच पा लैदा है। पानी तों
बाहर मच्छी तडहफ रही हुन्दी है।

गुरू साहब दा कोमल हिरदा इह वेख विसमाद विच
आउदा है ते ध्यान विच आउदा है कि हर थां जिय नाल
इहो कुझ हो रेहा है। खुद्द बन्दा वी लालच विच आ के
खुद्द ही किसे नां किसे फाही विच फसदा है ते मार्या
जांदा है। कदी कोयी लालच ते कदी कोयी लालच। याद
रहे बहुते लोक गलत खान नाल उपजियां बीमारियां
करके मरदे हन। कदी कोयी लालच विच आ के
अजेही मायआ ते हत्य मारदा है जेहड़ी उहदी चिंता दा
कारन बणदी है।

गुरू साहब ने केहा कि सच्च दे पांथी गुरमुख बन्दे इस
मायआ जाल विच नही फसदे। गुरमुखां नूं मौत वाला
काल नही पैदा। उह जदों जांदे हन उह इस तरां हुन्दा है
जिवे पानी दी बूद समुन्दर विच जा रलदी है।

गुरू साहब ने केहा कि बाकी इनां भोले जियां दे वस्स
कुझ नही।

फिर इसे शबद दी व्याख्या ओनां शाम दे दीवान विच
कीती ते भरी संगत दी शमूलियत नाल गायआ।

सिरीरागु महला 1 ॥ मछुली जालु न जाण्या सरु खारा
असगाहु ॥ अति स्थानी साहनी क्यु कीतो वेसाहु ॥ कीते
कारनि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥1॥ भायी रे इउ
सिरि जाणहु कालु ॥ ज्यु मछी त्यु माणसा पवै अचिता
जालु ॥1॥ रहाउ ॥ सभु जगु बाधी काल को बिनु गुर

कालु अफारु ॥ सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥ हउ तिन कै बलेहारनै दरि सचै सच्चार ॥2॥ सीचाने ज्यु पंखिया जाली बधिक हाथि ॥ गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥ बिनु नावै चुनि सुटियह कोइ न संगी साथि ॥3॥ सचो सचा आखीए सचै सचा थानु ॥ जिनी सचा मन्ना तिन मनि सचु ध्यानु ॥ मनि मुखि सूचे जाणियह गुरमुखि जिना ग्यानु ॥4॥ सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाय ॥ साजनि मिलिए सुखु पायआ जमदूत मुए बिखु खाय ॥ नावै अन्दरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ॥5॥ बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाय ॥ गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाय ॥ तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाय ॥6॥ तूहै साजनु तूं सुजानु तूं आपे मेलणहारु ॥ गुर सबदी सालाहीए अंतु न पारावारु ॥ तिथै कालु न अपडै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥7॥ हुकमी सभे ऊपजह हुकमी कार कमाह ॥ हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाह ॥ नानक जो तिसु भावै सो थीए इना जंता वसि किछु नाह ॥8॥4

साधुआं ने जदों केहा धत्र बाबा नानक तां हर पासे वाहगुरू वाहगुरू होन लग्ग प्या। जंगल विच मंगल लग्ग ग्या।



कलानौरिया दी नूह नू उपदेश◆

करतारपुर बैठ्यां जदों प्रिसती लोक बाबे दुआले ज्यादा ही झरमट पा दिन्दे सन (भाव रूहानियत दी गल घट्ट करनी ते ज्यादा दुन्यावी मंगा करनियां कि बाबा जी किरपा करो मेरे घर दुद्ध-पुत दी दात होवे, मेरा जमीनी झगड़ा मुक्के, मैं नू तन्दरुसती मिले आदि आदि) तां बाबा कदी कदी करतारपुर तों खिसक जायआ करदा सी।

एसे तरां इक वेरां गुरू साहब भायी लहने नू कहन लग्गे कि मैं नू इक दो दिन दी हुन छुट्टी दे। फिर अगले मन्हेर सार इकल्ले रावी च इशानान करन उपरंत पार चले गए। चडहदे पासे नू ज्यो तुरे पिंड भगठाना तुलियां हुन्दे होए 15 कि. मी. दा पैडा करके कलानौर ठाने दे लागे पहुंच, लहौरी दरवाजे दे कोल जा बैठे।

जदों मन्न विच आवे उच्ची उच्ची गुरबानी गाउन। हौली हौली लागे रौनक वद्धदी गई। लोकां ने बाबे नू पछान वी ल्या। शहर दे लोकां वी आउना शुरू कर दिता। तुली गोत दे खतरी दुकानदार ने गुरू साहब नू बड़ी अधीनगी सहत बेनती कीती कि बाबा जी किरपा करके मेरे घर चरन पायो। गुरू साहब ने जदों महसूस कीता कि इह बन्दा दिलों हो के बेनती कर रेहा है तां गुरू साहब ने केहा कि चंगा पुरखा शामी आ जायी अज्ज रात तेरे घर ही गुजारांगे।

शामी उह तुली खतरी गुरू साहब नू आपने घर लै ग्या। ओनी दिनी सुहागणां वलों वरत रक्खन दा रिवाज आम

सी। खतरी दा व्याह ताजा ताजा ही होया सी। नूह बहुत अमीर घर दी सी। इह चाननी रात वाले दिन सन ते जनानियां वरत चन्दरमे नू वेख के खोहलना हुन्दा सी।

जिवे चन्दरमा दिख्या तां नूह ने करम कांड कीता। उस उपरंत उस ने आपने घर वाले नू मत्था टेक्या। फिर सस्स नू सहुरे नू वी मत्था टेकना सी। नूह ने माड़ा जेहा झुक्क के सस्स नू नमसकार कीती पर पैरां नू हत्थ नही लायआ। इस ते खतरी ने आपनी बहू नू केहा कि माता दे पैर बूह।

वहुटी ने मुसकराउदी होयी केहा कि मेरे कोलो झुक्का नही जा रेहा। हो सकदा उस ने तंग अंगी (जां चौली) पायी होए। पर प्रभाव इहो ल्या जा रेहा सी कि उह अमीर घरों होन करके अजे आकड़ विच है। इस ते घर विच थोड़ी तूं तूं मैं मैं होयी जेहडी गुरू साहब दे नोटिस विच वी आ गई। गुरू साहब ने इस नूह रानी नू ग्यान दिता कि बीबा इह रंग थोड़े दिनां दा ही है।

गुरू साहब ने उस धी उपदेश दिता कि हे उच्चे लंमे कद्द वाली, भर-जुआनी ते अप्पड़ी होई, माणमत्ती चाल वाली कुड़ीए अखे भरवीं छाती दे कारन मैथों लिप्या नहीं जांदा। अखे मैं सस्स ळ किवें मत्था टेकां? हे भैने इस भरवीं जुआनी दे कारन अहंकार ना कर। इहनूं जांद्यां चिर देर नहीं लग्गनी। वेख जेहड़े पहाड़ां वरगं पक्के महल्ल जित्रां ळ चुने दा पलसतर लग्गा हुन्दा सी, उह भी डिगदे मैं वेखे ने तेरी जुआनी दी तां कोयी पांयां ही नहीं है। साहब ने सलोक उचार्या:-

उतंगी पैओहरी गहरी गंभीरी ॥ ससुड़ि सुहिया किव करी निवनु न जाय थनी ॥ गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीए धउलहरी ॥ से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थनी ॥1॥ सुनि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैनु अपारु ॥ पहला वसतु सिजानि कै तां कीचै वापारु ॥ दोही दिचै दुरजना मित्रां कूं जैकारु ॥ जितु दोही सजन मिलनि लहु मुंधे वीचारु ॥ तनु मनु दीजै सजना ऐसा हसनु सारु ॥ तिस सउ नेहु न कीचयी जि दिसै चलणहारु ॥ नानक जिन्नी इव करि बुझ्या तिनं विटहु कुरबानु ॥

इह सलोक हौली हौली इलाके विच मशहूर हो गया ते ज्यादा शौकीन औरतां दे सबंध विच पड़्या जान लग्गा।



मूरख बन्दे ते नाम दा रंग नही चडह सकदा।व

गुरू साहब ओनी दिनी करतारपुर साहब बराजमान सन। तरकालां दा वेला सी। धरमसाल दे लागों दी इक जट्ट निकल्या जिस दे हत्थ विच तेल नाल भर्या चौमुखी दीवा सी ते नाल उसदे रिसतेदार सन। सेवादारां जदों उनूं पुच्छ्या कि किधर दी रवानगी है। उस ने केहा क्युकि अजकल शुभ दिन चल रहे ने (चेत जां हाड़ जां पोह दा महीना) इस करके पिप्पल दी पूजा दा फल बहुत उतम हुन्दा है। कुझ समें बाद इह सारें जने पिप्पल दी प्रकरमा करन लग्ग पए। ओदों तक्क गुरू साहब वी

ਸੰਗਤ ਵਿਚ ਬਰਾਜ ਸਨ। ਬਾਹਰੋ ਆਏ ਸਾਥੂਆਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਤੇ ਸਵਾਲ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੁਹਾਡੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਨਮੁਕੱਖਾਂ ਤੇ ਕੌਧੋ ਨਹੀਂ ਪਿਆ? ਇਹ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡੇ ਗਵਾਂਠ ਵਿਚ ਹੀ ਹਨ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਮੁਸਕਰਾਉਂਦੇ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਕੇਹਾ:-

ਰਾਤੀ ਹੋਵਨਿ ਕਾਲਿਆ ਸੁਪੇਦਾ ਸੇ ਵੱਤਰ ॥ ਦੇਹੁ ਬਗਾ ਤਪੈ ਘਨਾ ਕਾਲਿਆ ਕਾਲੇ ਵੱਤਰ ॥ ਅੰਧ ਅਕਲੀ ਬਾਹਰੇ ਮੂਰਖ ਅੰਧ ਗਿਆਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਨਦਰੀ ਬਾਹਰੇ ਕਬਹ ਨ ਪਾਵਹ ਮਾਨੁ ॥2॥ ਪਤਝੀ ॥ ਕਾਯਆ ਕੋਟੁ ਰਚਾਯਆ ਹਰਿ ਸਚੈ ਆਪੈ ॥ ਇਕਿ ਦੂਜੈ ਭਾਯ ਖੁਆਇਅਨੁ ਹਤਮੈ ਵਿਚਿ ਵਪਾਏ ॥ ਇਹੁ ਮਾਨਸ ਜਨਮੁ ਟੁਲੰਭੁ ਸਾ ਮਨਮੁਖ ਸੰਤਾਪੈ ॥ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੌ ਬੁਝਸੀ ਜਿਸੁ ਸਤਿਗੁਰੁ ਥਾਪੈ ॥ ਸਮੁ ਜਗੁ ਖੇਲੁ ਰਚਾਯਓਨੁ ਸਮ ਵਰਤੈ ਆਪੈ ॥13॥

ਰਾਤਾਂ ਕਾਲਿਆਂ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹਨ, ਪਰ ਚਿਟ੍ਰਿਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੇ ਉਹੀ ਚਿਟ੍ਰੇ ਰੰਗ ਹੀ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਭਾਵ ਰਾਤ ਦੀ ਕਾਲਖ ਦਾ ਅਸਰ ਉਹਨਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ, ਦਿਨ ਚਿਟ੍ਰਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਚੰਗਾ ਤਕੜਾ ਚਮਕਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਕਾਲੇ ਪਦਾਰਥਾਂ ਦੇ ਰੰਗ ਕਾਲੇ ਹੀ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਭਾਵ ਦਿਨ ਦੀ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦਾ ਅਸਰ ਉਹਨਾਂ ਕਾਲਿਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ। ਏਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜੋ ਮਨੁਕੱਖ ਅਠ੍ਹੇ ਮੂਰਖ ਅਕਲ-ਹੀਨ ਹਨ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਅਠ੍ਹੀ ਹੀ ਮਤਿ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ; ਹੇ ਨਾਨਕ! ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਉਤੇ ਪ੍ਰਭੂ ਦੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਹੋਈ ਉਹਨਾਂ ਠ ਕਦੇ 'ਨਾਮ' ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦਾ ਮਾਨ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ।

ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੂਰਖਾਂ ਨੂੰ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿ ਕਿਸੇ ਰੁਕ਼ ਦੀ ਜੜ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤੇਲ ਦੇਣਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮਾਰਨ ਤੁਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅਮੂਮਨ ਦੀਵੇ ਚੋਟੀ ਬੁਝੜਾਂ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਤੇਲ ਜੜ੍ਹਾਂ ਚ ਰੁਲਦਾ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਦਲੀਲ ਪੂਰਨ ਜਵਾਬ ਸੁਣਕੇ ਹਰ ਕੋਈ ਖ਼ਤਰ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਖ਼ਤਰ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਕਰ ਉਠਿਆ।



ਮਰੀ ਮਝੜ ਤੇ ਜਟੁ ਵੀ ਮਰਨੇ ਪੈ ਗਯਾ◆

ਇਕ ਵੇਰਾਂ ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਬਰਾਜਮਾਨ ਸਨ ਤੇ ਕੁਝ ਸਾਥੂ ਵੀ ਆਏ ਸਨ। ਦੀਵਾਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਲੋਕ ਆਪਣੇ ਟੁਕੜੇ ਸੁਕੜੇ ਬਾਬੇ ਨਾਲ ਸਾਂਝੇ ਕਰਕੇ ਸੇਧ ਲੈ ਰਹੇ ਸਨ। ਔਦੋਂ ਹੀ ਕਿ ਇਕ ਬੀਮਾਰ ਨੂੰ ਉਹਦੇ ਭਾਯੀ ਬੰਦੀ ਲੈ ਕੇ ਆਏ ਕਿ ਬਾਬਾ ਜੀ ਇਹ ਚੰਗਾ ਭਲਾ ਸੀ। ਇਹਦੀ ਮਝੜ ਬੀਮਾਰ ਹੋ ਕੇ ਮਰ ਗਈ ਤੇ ਇਸਨੇ ਅਜੇਹਾ ਹੜਕਾ ਲਿਆ ਕਿ ਬੀਮਾਰ ਹੋ ਗਿਆ। ਹਕੀਮ ਨੇ ਵੀ ਜਵਾਬ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਬਾਬਾ ਜੀ ਇਸ ਤੇ ਕਿਰਪਾ ਕਰੋ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਉਸ ਮਰੀਜ਼ ਦੇ ਸਿਰ ਤੇ ਹੱਥ ਫੇਰਿਆ ਤਾਂ ਉਸ ਦਿੱਖਾਂ ਅਕੱਖਾਂ ਖੁਲ੍ਹਿਲੀਆਂ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਉਹਦਾ ਨਾਂ ਲੈ ਕੇ ਕੇਹਾ ਕਿ ਫਲਾਘਣਾ ਜੀਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਤੂੰ। ਮਰੀਜ਼ ਦਿੱਖਾਂ ਅਕੱਖਾਂ ਇਕ ਦਮ ਚਮਕ ਉਠਿਆਂ ਤੇ ਉਸ ਨੇ ਕੇਹਾ "ਜੀ ਹਾਂ।" ਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਰੋਨ ਲਗ ਪਿਆ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ ਫਲਾਘਣਾ ਪਰ ਇਕ ਦਿਨ ਇਥੋਂ ਜਾਨਾ ਪੈਨਾ ਈ ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਨਾਂ ਇਸ ਸਚਾਈ ਦਾ? ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਪਤਾ ਹੈ। ਇਥੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਵੀ ਬਹ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣਾ। ਅਗੇ ਪਿੱਛੇ ਹਰ ਕਿਸੇ ਨੇ ਜਾਨਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਉਸ ਨੂੰ ਸ਼ਾਬਾਸ਼ ਦਿੱਤੀ। ਤੇ ਫਿਰ ਕੇਹਾ ਕਿ ਤੂੰ ਤਾਂ ਬਿਲਕੁਲ ਠੀਕ ਠਾਕ ਏਂ। ਉਹ ਜ਼ੋਰਬਾਤੀ ਹੋਯਾ ਫਿਰ ਹੰਝੂ ਵਹਾਉਣ ਲਗਾ।

ਸਾਹਬ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੇਹਾ ਕਿ ਭਾਯੀ ਤੂੰ ਬਚ ਤਾਂ ਜਾਏਗਾ ਪਰ ਜਦੋਂ ਆਖੀਰ ਦਿਨ ਆਯਾ ਤਾਂ ਤੈਨੂੰ ਭਾਕੀਆਂ ਦਿੱਖਾਂ ਮਝੜਾਂ ਤੇ ਪ੍ਰਵਾਰ ਵੀ ਚੁਡੁਣਾ ਪੈਣਾ। ਖੂਹ ਤੇ ਜਮੀਨ ਵੀ ਚੁਡੁਣੀ ਪੈਣੀ ਆ ਸੀ ਚ ਲੈ! ਆਖਣ ਲਗਾ "ਹਾਂ ਜੀ।"

ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ ਕਿ ਜਦੋਂ ਤੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਇਕ ਦਿਨ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਚੁਡੁਣਾ ਤਾਂ ਫਿਰ ਇਕ ਮਝੜ ਦੇ ਮਰਨ ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਟੁਕੜੀ ਕੌਧੋ ਹੋਏਓ? ਉਸ ਜਟੁ ਦਿੱਖਾਂ ਅਕੱਖਾਂ ਖੁਲ੍ਹ ਚੁਕੀਆਂ ਸਨ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਫਿਰ ਸਿਰ ਤੇ ਹੱਥ ਫੇਰਿਆ ਤੇ ਕਹਿ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਬਿਲਕੁਲ ਨੌ ਬਰ ਨੌ ਆਂ। ਜਾਯੋ ਹੁਣ ਤੁਸੀਂ।

ਇਹ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਕੋਲ ਬੈਠੇ ਸਾਥੂ ਵੇਖ ਸੁਣ ਰਹੇ ਸਨ। ਔਨਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਸਵਾਲ ਕੀਤਾ ਕਿ ਕੀ ਵੱਯਾ ਹੈ ਕਿ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਚੁਡੁ ਚੁਡੁ ਜਾਨਾ ਹੈ ਫਿਰ ਇਹ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦਾ ਮੋਹ ਏਨਾਂ ਕੌਧੋ ਪਾਲਦੇ ਹਨ?

ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ ਕਿ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੇ ਹੁਕਮ ਦੀ ਹਰ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਸੋਝੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਜਿਸ ਤੇ ਕਿਰਪਾ ਕਰੇ ਉਹੀ ਬੁਝੜਦੇ ਨੇ।

ਸਾਹਬ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਗਾਯਆ:-

ਮਃ 1 ॥ ਆਪਿ ਬੁਝਾਏ ਸੋਯੀ ਬੂਝੈ ॥ ਜਿਸੁ ਆਪਿ ਸੁਝਾਏ ਤਿਸੁ ਸਮੁ ਕਿਛੁ ਸੂਝੈ ॥ ਕਹ ਕਹ ਕਥਨਾ ਮਾਯਆ ਲੂਝੈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਸਗਲ ਕਰੇ ਆਕਾਰ ॥ ਆਪੇ ਜਾਨੈ ਸਰਬ ਵੀਚਾਰ ॥ ਅਖਰ ਨਾਨਕ ਅਖੌ ਆਪਿ ॥ ਲਹੈ ਭਰਾਤਿ ਹੋਵੈ ਜਿਸੁ ਦਾਤਿ ॥2॥



ਅਪਰਸ ਲੋਕ ਇਸ ਬਹੁਮੁਲ੍ਹੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਵਿਅਰਥ ਕਰ ਦਿੰਦੇ ਨੇ◆

ਹਿੰਦੂ ਮਤ ਵਿਚ ਇਕ ਫਿਰਕਾ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਲੋਕ ਅਪਰਸ ਕਹਾਉਂਦੇ ਹਨ ਉਹ ਪਲ ਪਲ ਤੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਨਹਾਉਂਦੇ ਖੋਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਚੁੱਠ ਜਾਣ ਤਾਂ ਵੀ ਨਹਾਉਣਗੇ। ਉਹ ਕੌਧੇ ਸਥਾਨਾਂ ਅਤੇ ਕੌਧੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਅਪਵਿੱਤਰ ਮੰਨਦੇ ਹਨ। ਸ਼ੂਦਰ ਨੂੰ ਤਾਂ ਇਹ ਚੁੱਠ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦੇ। ਕੁਝ ਜਾਨਵਰ ਜਿਵੇਂ ਕੁੱਤਾ ਬਿੱਲਾ ਆਦਿ ਹਨ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਿਤੇ ਗਲਤੀ ਨਾਲ ਹੱਥ ਲੱਗ ਜਾਏ ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨਹਾਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਰੋਜ਼ ਰੋਜ਼ ਕਪੜੇ ਵੀ ਖੋਂਦੇ ਹੋਏ ਪਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਰਸੋਯੀ ਟਿਯਾਰ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਨਹਾਉਣਾ। ਇਹ ਲੋਕ ਵੀ ਬਾਲਨ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ ਖੋਂਦੇ ਹਨ ਫਿਰ ਬਾਲਦੇ ਹਨ।

ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਵਿਖੇ ਆਏ ਸਾਥੂਆਂ ਜਦੋਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਅਪਰਸ ਲੋਕਾਂ ਬਾਰੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਜਾਨਨਾ ਚਾਹਿਆ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਗਾਯਆ।

ਮਃ 1 ॥ ਵਸਤਰ ਪਖਾਲਿ ਪਖਾਲੇ ਕਾਯਆ ਆਪੇ ਸੰਜਮਿ ਹੋਵੈ ॥ ਅੰਤਰਿ ਮੈਲੁ ਲਗੀ ਨਹੀ ਜਾਨੈ ਬਾਹਰਹੁ ਮਲਿ ਮਲਿ ਧੋਵੈ ॥ ਅੰਧਾ ਭੁਲਿ ਪਯਾ ਜਮ ਜਾਲੇ ॥ ਵਸਤੁ ਪਰਾਯੀ ਅਪੁਨੀ ਕਰਿ ਜਾਨੈ ਹਤਮੈ ਵਿਚਿ ਟੁਕੁ ਖਾਲੇ ॥ ਨਾਨਕ ਗੁਰਮੁਖਿ ਹਤਮੈ ਟੁਟੈ ਤਾ ਹਰਿ ਹਰਿ ਨਾਮੁ ਧਵਾਵੈ ॥ ਨਾਮੁ ਜਪੈ ਨਾਮੋ ਆਰਾਥੇ ਨਾਮੇ ਸੁਖਿ ਸਮਾਵੈ ॥

ਜੋ ਮਨੁਕੱਖ ਸਰੀਰ ਸੁਚੇ ਰਕ਼ਨ ਲਈ ਨਿੱਤ ਕਪੜੇ ਧੋ ਕੇ ਸਰੀਰ ਖੋਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅਜੇਹਾ ਕਰਨ ਤੇ ਆਪਣੇ ਵਲ੍ਹੋਂ ਤਪਸਵੀ ਬਣ ਬੈਠਦਾ ਹੈ ਪਰ ਮਨ ਵਿਚ ਲੱਗੀ ਹੋਈ ਮੈਲ ਦੀ

उस नूं खबर ही नहीं, सदा सरीर नूं बाहरों ही मल मल के धोदा है, उह अन्हा मनुक्ख सिद्धे राह तों खुंझ के मौत दा डर पैदा करन वाले जाल विच फस्या होया है, हउमै विच दुक्ख सहारदा है क्युकि परायी वसत नूं आपनी समझ बैठदा है । पर जदों गुरू दे सनमुख हो के मनुक्ख दी हउमै दूर हुन्दी है, तदों उह प्रभू दा नाम सिमरदा है, नाम जपदा है, नाम ही याद करदा है ते नाम दी ही बरकति नाल सुख विच टिक्या रहन्दा है ।
इह सुणके साधू धन्न धन्न कर उठे ।

—◆—

मूरख ने लोक जेहड़े कहन्दे

7 धरतियां, 7 दीप ते 7 पताल हन◆

करतारपुर विखे गुरू साहब बराजमान सन कि साधूआं ने गुरू साहब कोलो आ पुच्छ्या कि बाबा जी असां सुणिए तुसी सारी धरती गाह मारी है । की इह गल सच्ची है कि कुल 7 दीप, 7 पताल ते 7 अकास ने?

गुरू साहब ने केहा इहो जेही गल कोयी मूरख ही कह सकदा है कि ऐनियां धरतियां ऐने अकाश ने। करतार दी रचना बेअंत है ते खास गल इह कि साडी सोच तों इह परे दी गल है। निरंकार दी हकूमत जां शासन जां हुकम दा कोयी वी मनुक्खी दिमाग अंत नही पा सकदा। जे इस तरां करन दा कोयी उपराला करेगा तां उह घाह ते पते तक्क दा वी अंत नही पा सकदा धरती तां बहुत बहुत दूर दी गल है।

अजेहियां गिणती मिणती दियां गल्लां ऐवे झल्ले लोकां दियां झल्लियां हन। बस असी तां जित्रा प्रभू सानूं दिसदा है ओने दी ही सिफत कर लईए तां बहुत है। निरंकार तां बेअंत है।

साहब शबद गाव्या:-

सलोक म 1 ॥ सभे राती सभि देह सभि थिती सभि वार ॥ सभे रुती माह सभि सभि धरत ॥ सभि भार ॥ सभे पानी पउन सभि सभि अगनी पाताल ॥ सभे पुरिया खंड सभि सभि लोय लोय आकार ॥ हुकमु न जापी केतड़ा कह न सकीजै कार ॥ आखह थकह आखि आखि करि सिफत ॥ वीचार ॥ त्रिनु न पाययो बपुडी नानकु कहै गवार ॥ 1 ॥ म 1 ॥ अख ॥ परनै जे फिरां देखां सभु आकारु ॥ पुछा ग्यानी पंडितां पुछा बेद बीचार ॥ पुछा देवां माणसां जोध करह अवतार ॥ सिध समाधी सभि सुनी जाय देखां दरबारु ॥ अगै सचा सचि नाय निरभउ भे विनु सारु ॥ होर कची मती कचु पिचु अंध्या अंधु बीचारु ॥ नानक करमी बन्दगी नदरि लंघाए पारि ॥ 2 ॥

—◆—

जदों बन्दा हुन्दा ओदों रब्ब नही हुन्दा।◆

करतारपुर ही साहब बैठे सन कि इक दिन किसे ने सवाल कर दिता कि जदों बन्दा रब्ब नूं पहुंचदा तां

उहदा वेहार क्यो बदल जांदा है? अजेहा बन्दा आम इनसान वाडू क्यो नही रह सकदा? कई वारी दुन्यावी लोक फिर अजेहे बन्दे बारे कह दिन्दे ने वेखो जी फलाना कित्रा झल्ल खलार रेहा है।

गुरू साहब ने समझायआ कि रब्ब दी प्रापती ही खुद्दी दे मिट्टन ते हुन्दी है। जदों बन्दे दी मै मिट्ट जांदी ओदों रब्ब दी समझ आउदी है। सो जदों बन्दे विच हऊमै ही नही होवेगी तां उहदा वेहार तां दूसर्या नालों वक्खरा होवेगा ही। मिसाल दे तौर ते जे उहदा मोह मुक्क गया तां फिर उनूं सारे बन्दे इको जेहे दिसणगे, चाहे कोयी पुत होवे ते भावे कोयी ओपरा होवे। उस अवसथा ते बन्दे दा फिर लालच वी खतम हो चुक्का हुन्दा है। मुकदी गल इह कि रब्ब नूं पहुंच्या बन्दा फिर बन्दा रह ही नही जांदा।

सो जदों रब्ब प्रगट हुन्दै ओदों बन्दा मुक्क चुक्का हुन्दा। गुरू साहब ने सलोक बोल्या:-

सलोक म 1 ॥ हउ मै करी तां तू नाही तू होवह हउ नाह ॥ बूझहु ग्यानी बूझना एह अकथ कथा मन माह ॥ बिनु गुर ततु न पाईए अलखु वसै सभ माह ॥ सतिगुरु मिलै त जाणीए जां सबदु वसै मन माह ॥ आपु गया भ्रमु भउ गया जनम मरन दुख जाह ॥ गुरमति अलखु लखाईए ऊतम मति तराह ॥ नानक सोहं हंसा जपु जापहु त्रिभवन तिसै समाह ॥ 1 ॥

—◆—

बाबा जी इहदा की मतलब,

'समुन्द साह सुलतान...'*

साहब करतारपुर बैठे सन कि इक गुरसिख ने दीवान विच पुच्छ ल्या कि गुरू जी जपुजी विच आह जेहड़ी पंगती आई है इहदा की मतलब, "समुन्द साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरह ॥?"

गुरू साहब ने केहा कि भायी सिक्खा इस दा मतलब इह है कि रब्ब वासते उह चंगा बन्दा जेहड़ा उहदी उपमा करे भावे निमाना निताना वी होवे। करतार दे दर ते बादशाह सुलतान नालो कीडे मकौडे दी ज्यादा इजत होवेगी जे उह रब्ब दा नां लैंदा है तां। इथे फिर गुरू साहब ने फिर होर बानी बोल दिती:-

मः 1 ॥ सउ मनु हसती ध्यु गुडु खावै पंजि सै दाना खाय ॥ उकै फूकै खेह उडावै सौह गइए पछुताय ॥ अंधी फूकि मुयी देवानी ॥ खसमि मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुल्हा चिडी का चुगानु गैनि चड़ी बिललाय ॥ खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाय खुदाय ॥ सकता सीहु मारे सै मिर्या सभ पिछै पै खाय ॥ होइ सताना घुरै न मावै साह गइए पछुताय ॥ अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक स्यु प्रीति करे अक तिडा अक डाली बह खाय ॥ खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाय खुदाय ॥ नानक दुनिया चारि देहाड़े सुखि कीतै दुखु होयी ॥ गला वाले हैनि घणोरे छडि न सकै कोयी ॥

ਮਖੀ ਮਿਠੈ ਮਰਨਾ ॥ ਜਿਨ ਤੂ ਰਖਹ ਤਿਨ ਨੇੜਿ ਨ
ਆਵੈ ਤਿਨ ਭਤ ਸਾਗਰੁ ਟਰਨਾ ॥2 ॥

—◆—

ਜਦੋਂ ਬੰਦੇ ਨੇ ਧੀ ਮਾਰ 'ਤੀ ਯ

ਜਦੋਂ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਬੜਾ ਟਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਦੋਦੇ ਪਿੰਡ ਦੇ ਦੋ
ਕਿਸਾਨ ਭਰਾਵਾਂ ਦਾ ਆਪਸੀ ਘਰ ਤੇ ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਵੇਖ ਕੇ
ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਲਗਾ ਸੀ। ਪਰ ਅੱਜਕਲ੍ਹ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਰਹਿਣਾ
ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਖਬਰ ਮਿਲੀ ਕਿ ਫਲਾਨੇ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਬੰਦੇ ਨੇ
ਸ਼ਰੀਕੇ ਦਿਆਂ ਸੁਨੀ ਸੁਠਾਈਆਂ ਗਲਾਂ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਆਪਨੀ
ਧੀ ਹੀ ਮਾਰ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਵਿਚ ਉਹ
ਬਦਚਲਨ ਸੀ। ਔਦੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੇ ਮੂੰਹੋਂ ਸਹਜ ਸੁਭਾਯ
ਸਲੋਕ ਨਿਕਲਿਆ:-

ਨਾਨਕ ਟੁਨਿਆ ਕੈਸੀ ਹੋਈ ॥ ਸਾਲਕੁ ਮਿਤੁ ਨ ਰਹਯੋ
ਕੋਈ ॥ ਭਾਯੀ ਬੰਧੀ ਹੇਤੁ ਚੁਕਾਯਆ ॥ ਟੁਨਿਆ ਕਾਰਨਿ
ਦੀਨੁ ਗਵਾਯਆ ॥5 ॥

—◆—

ਸਾਧੂਆਂ ਪੁੱਛਿਆ, "ਬਾਬਾ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਇਸ ਮਨ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਮਾਰਿਆ?"**

ਸਾਹਬ ਨੇ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ, "ਮਰਨੈ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਨਹੀਂ ਜੀਵਨ ਕੀ
ਨਹੀਂ ਆਸ ॥"

ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਸਾਹਬ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਸਨ ਕਿ ਕੁਝ ਧਾਰਮਿਕ
ਕਿਸਮ ਦੇ ਬੰਦੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਪੁੱਛਣ ਲੱਗੇ ਕਿ ਬਾਬਾ ਜੀ
ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਇਹ ਦੱਸੋ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਆਪਨੇ ਮਨ ਨੂੰ ਮਾਯਆ
ਮੋਹ ਤੋਂ ਕਿਵੇਂ ਵਰਜਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਮਨ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ
ਸਮਝਾਯਆ ਕਿ ਇਹ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਗਿਆਨ ਨਾਲ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਹੈ।
ਮੈਂ ਕਰਦੇ ਦੀ ਖੇਡ ਨੂੰ ਪਛਾਨ ਲਿਆ ਹੈ। ਹੁਣ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਮੇਰੇ
ਮਨ ਵਿਚ ਮੌਤ ਦਾ ਭੈ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਗਿਆ। ਗਿਆਨ ਰਾਂਹੀਂ ਮੈਨੂੰ ਕਾਮ
ਕ੍ਰੋਧ ਲੋਭ ਮੋਹ ਹੰਕਾਰ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਸਮਝ ਆ ਗਈ ਹੈ।



ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੀ ਪਹਨੀਂ ਸੇਲੀ ਟੋਪੀ, ਮਾਲਾ, ਪੋਥੀ ਤੇ ਗੋਦੜੀ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਦੁਆਬਾ
ਵਿਖੇ। (ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਫੇਸਬੁਕ ਤੋਂ ਲਈ।) ਫੇਸ ਬੁਕ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਵਸਤਾਂ ਗੁਰੂ ਹਰ
ਸਹਾਯ ਦੇ ਸੋਢਿਆਂ ਕੋਲ ਹਨ ਪਰ ਸਾਈਕਲ ਯਾਤਰੀ- 302 ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਕਰਤਾਰਪੁਰ
ਦੁਆਬਾ ਵਿਖੇ ਮੌਜੂਦ ਹਨ। ਯਾਦ ਰਹੇ ਪੁਰਾਨੇ ਸਮਿਆਂ ਵਿਚ ਸਾਧੂਆਂ ਨੂੰ ਲੋਕ ਗੋਦੜੀ
ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਸੇਲੀ ਟੋਪੀ ਪੁਰਾਨੇ ਜਮਾਨੇ ਵਿਚ ਸਾਧੂ ਫਕੀਰ ਵਾਲਾਂ ਦੇ ਉਤੇ ਸਰਦੀ
ਤੋਂ ਬਚਨ ਲਈ ਪਾਯਆ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਗੋਦੜੀ ਨਾਲ ਭਰਿਆ ਕੋਟ ਜਾਂ ਰਜਾਥੀ ਸਮਝੀ
ਜਾਏ। ਜੋ ਸਾਧੂ ਆਪਨੇ ਨਾਲ ਹੀ ਲੈ ਫਿਰਦੇ ਹੁੰਦੇ ਸਨ।

ਗਲ ਸਿਫ਼ੀ ਜੇਹੀ ਹੈ ਕਿ ਜਿਲ੍ਹੇ ਮਰਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਜਾਨਾ ਕੌਯੋ ਨਾਂ
ਉਥੇ ਜੀਂਦੇ ਜੀ ਹੀ ਜਾਯਆ ਜਾਏ। ਜੋਗੀ ਜੇਹੜੇ ਅਨਹਦ
ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਵੱਜਨ ਦੀ ਗਲ ਕਰਦੇ ਹਨ ਉਹ ਗੁਰਬਾਨੀ ਤੇ
ਨਿਰੰਕਾਰ ਦੀ ਵੀਚਾਰ ਸਦਕਾ ਹੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਮੁਕਦੀ
ਗਲ ਮੈਂ ਸਚ ਨੂੰ ਪਛਾਨ ਲਿਆ ਹੈ ਤੇ ਕਰਤਾਰ ਦੇ ਭੈਯ ਵਿਚ
ਰਹਿੰਦਾ ਹਾਂ।

ਸਾਹਬ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਉਚਾਰਿਆ:-

ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ 1 ॥ ਮਰਨੈ ਕੀ ਚਿੰਤਾ ਨਹੀਂ ਜੀਵਨ ਕੀ
ਨਹੀਂ ਆਸ ॥ ਤੂ ਸਰਬ ਜਿਯਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਲਹੀ ਲੇਖੈ ਸਾਸ ਗਿਰਾਸ
॥ ਅੰਤਰਿ ਗੁਰਮੁਖਿ ਤੂ ਵਸਹ ਜੁਯੁ ਭਾਵੈ ਤੁਯੁ ਨਿਰਜਾਸਿ ॥1 ॥
ਜਿਯਰੇ ਰਾਮ ਜਪਤ ਮਨੁ ਮਾਨੁ ॥ ਅੰਤਰਿ ਲਾਗੀ ਜਲਿ ਬੁਝੀ
ਪਾਯਆ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਿਆਨੁ ॥1 ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਅੰਤਰ ਕੀ ਗਤਿ
ਜਾਠੀਏ ਗੁਰ ਮਿਲੀਏ ਸੰਕ ਉਤਾਰਿ ॥ ਮੁਯਾ ਜਿਤੁ ਘਰਿ ਜਾਏ
ਤਿਤੁ ਜੀਵਦਾ ਮਰੁ ਮਾਰਿ ॥ ਅਨਹਦ ਸਬਦਿ ਸੁਠਾਵਨੇ ਪਾਏ
ਗੁਰ ਵੀਚਾਰਿ ॥2 ॥ ਅਨਹਦ ਬਾਨੀ ਪਾਏਏ ਤਹ ਹੁਤਮੈ ਹੋਏ
ਬਿਨਾਸੁ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਸੇਵੇ ਆਪਨਾ ਹੁਤ ਸਦ ਕੁਰਬਾਨੈ ਤਾਸੁ ॥
ਖਡਿ ਦਰਗਹ ਪੈਨਾਏ ਮੁਖਿ ਹਰਿ ਨਾਮ ਨਿਵਾਸੁ ॥3 ॥ ਜਹ
ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਸਿਵ ਸਕਤੀ ਕਾ ਮੇਲੁ ॥ ਤ੍ਰੈਹੁ ਗੁਨ ਬੰਧੀ
ਦੇਹੁਰੀ ਜੋ ਆਯਾ ਜਗਿ ਸੋ ਖੇਲੁ ॥ ਵਿਜਾਗੀ ਦੁਖਿ ਵਿਛੁਡੇ
ਮਨਮੁਖਿ ਲਹਹ ਨ ਮੇਲੁ ॥4 ॥ ਮਨੁ ਬੈਰਾਗੀ ਘਰਿ ਵਸੈ ਸਚ ਭੈ
ਰਾਤਾ ਹੋਏ ॥ ਗਿਆਨ ਮਹਾਰਸੁ ਭੋਗਵੈ ਬਾਹੁਡਿ ਭ੍ਰੁਖ ਨ ਹੋਏ ॥
ਨਾਨਕ ਇਹੁ ਮਨੁ ਮਾਰਿ ਮਿਲੁ ਭੀ ਫਿਰਿ ਦੁਖੁ ਨ ਹੋਏ ॥5 ॥

—◆—

ਜਦੋਂ ਬਾਬੇ ਨੇ ਬੇੜਨਸਾਫੀ ਖਿਲਾਫ ਰਬ ਨੂੰ ਉਲਾਹਮਾ ਦਿੱਤਾ◆◆

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਸਨ ਕਿ ਕਿਸੇ ਨੇ
ਅਜੇਹੀ ਗਲ ਦੱਸੀ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਅਹਲਕਾਰ ਕਿਵੇਂ ਜਾਲਮ
ਹੋ ਗਏ। ਇਨਸਾਫ ਨਾਂ ਦੀ ਟਾਂ ਕੋਈ ਗਲ ਹੀ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਗਈ।
ਅੱਜ ਇਨਸਾਫ ਵਿਕਕ ਰੇਹਾ ਹੈ। ਪੈਸਾ ਦੁੱਠੇ ਤੇ ਕਾਜੀ ਕੋਲੋ
ਆਪਨੇ ਹੱਕ ਵਿਚ ਫੈਸਲਾ ਲੈ ਲਯੋ। ਰਬ ਦੇ ਪਾਏ ਵਾਸਤੇ ਨੂੰ
ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਮਨਦਾ। ਕਲਿਜੁਗ ਦਾ ਕੁਝ ਅਜੇਹਾ ਪਹਰਾ
ਆਯਾ ਹੈ ਕਿ ਖੁਦ ਰਾਜਾ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਇਨਸਾਫ ਦਿੰਦਾ ਜੇਹੜਾ
ਕੋਈ ਭੇਟ ਲੈ ਕੇ ਮਿਲਦਾ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਆਸਾ ਰਾਗ ਵਿਚ ਸ਼ਬਦ ਬੋਲਿਆ। ਚਾਰ ਚੁਫੇਰੇ
ਧੰਨ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ, ਧੰਨ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਹੋ ਗਏ।

ਆਸਾ ਮਹਲਾ 1 ॥ ਤਾਲ ਮਦੀਰੇ ਘਟ ਕੇ ਘਾਟ ॥ ਦੋਲਕ
ਟੁਨਿਆ ਵਾਜਹ ਵਾਜ ॥ ਨਾਰਦੁ ਨਾਚੈ ਕਲਿ ਕਾ ਭਾਉ ॥ ਜਤੀ
ਸਤੀ ਕਹ ਰਾਖਹ ਪਾਉ ॥1 ॥ ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਵਿਟਹੁ ਕੁਰਬਾਨੁ
॥ ਅੰਧੀ ਟੁਨਿਆ ਸਾਹਬੁ ਜਾਨੁ ॥1 ॥ ਰਹਾਉ ॥ ਗੁਰੂ ਪਾਸਹੁ
ਫਿਰਿ ਚੇਲਾ ਖਾਯ ॥ ਤਾਮਿ ਪਰੀਤਿ ਵਸੈ ਘਰਿ ਆਏ ॥ ਜੇ ਸਉ
ਵਹਿਆ ਜੀਵਨ ਖਾਨੁ ॥ ਖਸਮ ਪਛਾਨੈ ਸੋ ਦਿਨੁ ਪਰਵਾਨੁ
॥2 ॥ ਦਰਸਨਿ ਦੇਖਿਏ ਦਯਾ ਨ ਹੋਏ ॥ ਲਾਏ ਦਿਤੇ ਵਿਨੁ ਰਹੈ ਨ
ਕੋਏ ॥ ਰਾਜਾ ਨ੍ਯਾਉ ਕਰੇ ਹਥਿ ਹੋਏ ॥ ਕਹੈ ਖੁਦਾਯ ਨ ਮਾਨੈ
ਕੋਏ ॥3 ॥ ਮਾਨਸ ਮੂਰਤਿ ਨਾਨਕੁ ਨਾਮੁ ॥ ਕਰਨੀ ਕੁਠਾ ਦਰਿ
ਫੁਰਮਾਨੁ ॥ ਗੁਰ ਪਰਸਾਦਿ ਜਾਨੈ ਮੇਹਮਾਨੁ ॥ ਤਾ ਕਿਛੁ ਦਰਗਹ
ਪਾਵੈ ਮਾਨੁ ॥4 ॥4 ॥

—◆—

"ਵਡੇ ਵਡੇ ਸਮੁੰਦਰਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਟਾਪੂ ਵੀ ਬਰਕਰਾਰ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ"- ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਦਾ ਹੰਕਾਰ ਭਯਾ

ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਤੋਂ 22 ਕਿ. ਮੀ. ਦੱਖਣ ਪਾਸੇ ਧਿਆਨਪੁਰ-ਕੋਟਲੀ ਦੇ ਲਾਗੇ ਹੈ ਪਿੰਡ ਡਾਲੇ ਚਕਕ (ਨਕਸ਼ਾ ਸੂਚਕ : 31.896885, 75.077377) ਹੈ। ਇਥੇ ਪੀਰ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਨੇ ਚਿਰੋਕਨਾ ਡੇਰਾ ਜਮਾਇਆ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਪੀਰ ਜੀ ਦਾ ਮੇਲ ਪਹਲਾਂ ਇਕ ਵੇਰਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨਾਲ ਪਸਰੂਰ ਵਿਖੇ ਵੀ ਹੋ ਚੁਕਾ ਸੀ। (ਇਥੇ ਯਾਦਗਾਰੀ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਵੇਖੋ ਸਫਾ 373)

ਇਹ ਉਹਨਾਂ ਦਿਨਾਂ ਦੀ ਗਲ ਹੈ (1535-36 ਈ ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਵਿਖੇ ਨਿਵਾਸ ਕਰਦੇ ਸਨ।

ਇਕ ਦਿਨ ਪੀਰ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਦੀ ਮਜਲਸ ਵਿਚ ਹੀ ਕਿਸੇ ਮੁਰੀਦ ਨੇ ਕੇਹਾ ਕਿ ਪੀਰ ਜੀ ਤੁਹਾਨੂੰ ਤਾਂ ਕੋਈ ਪੁੱਛਦਾ ਵੀ ਨਹੀਂ। ਤੁਹਾਡੇ ਗਵਾਂਢ ਵਿਚ ਹੀ, ਪਕੜੀਆਂ ਲਾਗੇ, ਸਾਰੀ ਲੋਕਾਈ ਤਾਂ ਹਿੰਦੂ ਦਰਵੇਸ਼ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੇ ਢੁਕ ਰਹੀ ਹੈ।

ਇਸ ਤੇ ਪੀਰ ਨੇ ਹੰਕਾਰ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਕੇਹਾ, "ਹਾਹੋ! ਉਸ ਕਰਾੜ (ਬਾਣੀਏ) ਨੇ ਪਾਏ ਕੁ ਘੋ ਝੋ ਝੋ ਝੋ ਕਰ ਹੀ ਲਿਆ ਵਾ। ਮੌਕਾ ਆਉਣ ਤੇ ਈ ਪੀ ਲਵਾਂਗੇ ਜਿਵੇਂ ਸਬਜੀ ਤੇ ਨਿੰਮ੍ਬੂ ਨਿਚੋੜ ਕੇ ਫੋਗੇ ਪਰਾਂ ਸੁਟ ਦਿੰਦਾ ਵਾ।"***

ਜਾਨੀ ਜਾਨ ਗੁਰੂ ਨੇ ਇਕ ਦਿਨ ਦੋ ਕੁ ਸੇਰ ਘੋ ਲਿਆ ਤੇ ਭਾਈ ਅਜਿਠੇ ਰੰਧਾਵੇ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਕੇ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਵਲ ਰਵਾਨਾ ਹੋ ਗਏ। ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਜਾ, ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਪਿੰਡ ਦੇ ਬਾਹਰਵਾਰ ਜਾ ਬੈਠੇ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਅਜਿਠੇ ਨੂੰ ਪਿੰਡ ਪੀਰ ਵਲ ਭਾਵ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਭੇਜਿਆ ਕਿ ਜਾਓ ਜਾ ਕੇ ਪੀਰ ਨੂੰ ਸਾਡੀ ਸਲਾਮ ਕਹੀ। ਅਜਿਠਾ ਜਾ ਪੀਰ ਨੂੰ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਮਿਲਿਆ ਅਤੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਪੀਰ ਜੀ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੁਆ ਸਲਾਮ ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਪਿੰਡੋਂ ਬਾਹਰਵਾਰ ਬੈਠਾ ਹੈ, ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਲਨ ਆਇਆ ਹੈ।

ਪੀਰ ਨੂੰ ਇਹ ਸੁਣ ਕੇ ਚਾਧ ਚੜ੍ਹ ਗਏ। ਕਿਉਂਕਿ ਉਦੋਂ ਤਕ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਨੂੰ ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਆ ਮਤਰ ਚੁਕਕੀ ਸੀ ਕਿ ਬਾਬਾ ਰੱਬ ਦਾ ਰੂਪ ਹੈ।

ਪੀਰ ਖੁਦ ਬਾਬੇ ਨੂੰ ਲੈਣ ਗਏ।

ਬਾਬੇ ਕੋਲ ਪਹੁੰਚ ਦੁਆ ਸਲਾਮ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਜਿਥੇ ਬੜੇ ਤੇ ਬਾਬਾ ਬੈਠਾ ਸੀ ਉਥੇ ਹੀ ਦੋਨੋਂ ਬਹ ਗਏ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰ ਸਤਿਕਾਰ ਨਾਲ ਪੀਰ ਨੂੰ ਮਿਲੇ।

ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੂੰ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਆਪਣੇ ਹੁਜਰੇ ਤੇ ਲੈ ਗਏ। ਕਹਿਣ ਲਗਾ ਮੇਰੇ ਧੰਨ ਭਾਗ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਜੀ ਪਧਾਰੇ ਨੇ।

ਗੁਫਤਗੂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ। ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦੀ ਰਾਜੀ ਬਾਜੀ ਪੁੱਛੀ। ਮੁਸਕਰਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਪੀਰ ਨੇ ਪੁੱਛਿਆ "ਬਾਬਾ ਜੀ ਆਹ ਕੁਝ ਕਯੋ ਚੁਕਕੀ ਫਿਰਦੇ ਹੋ?" ਇਹ ਸਵਾਲ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਤਾਨਾ ਸੀ। ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਥੂ ਫਕੀਰਾਂ ਚ ਮਤਰ ਹੈ ਕਿ 'ਪਲੇ ਰਿਜਕ ਨਾਂ ਬੜਦੇ ਪੰਛੀ ਤੇ ਦਰਵੇਸ਼'। ਪੀਰ ਨੂੰ ਲਗਾ ਸੀ ਕਿ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨੇ ਘੋ ਭੇਟ ਕੀਤਾ ਹੈ ਤੇ ਬਾਬਾ ਉਹ ਘੋ ਵਾਲੀ ਮਘੀ ਚੁਕਕੀ ਫਿਰਨ ਡੇਹਾ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਬੜੀ ਹਲੀਮੀ ਨਾਲ ਕੇਹਾ "ਨਹੀਂ ਪੀਰ ਜੀ, ਇਹ

ਘੋ ਤੁਹਾਡੇ ਵਾਸਤੇ ਲੈ ਕੇ ਆਇਆ ਹੈ। ਲੰਮੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਪਲੀ ਪਲੀ ਕਰਕੇ ਜੋੜਿਆ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਇਹਨੂੰ ਝੋ ਚਕਕ ਜਾਓ ਜਿਵੇਂ ਸਲੂਨੇ ਉੱਤੇ ਨਿੰਮ੍ਬੂ ਨਿਚੋੜ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।" ਯ

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਘੋ ਦਾ ਕੁਝ ਪੀਰ ਦੇ ਅਗੇ ਰਕ਼ ਦਿੱਤਾ।

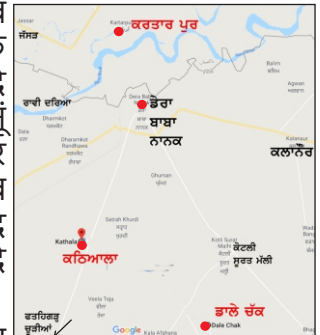
ਇਹ ਸੁਣ ਕੇ ਪੀਰ ਦਾ ਆਪਣਾ ਪਾਲਾ ਕੰਮ ਉਠਾ ਅਤੇ ਉਹਨੂੰ ਆਪਣੀ ਕਹੀ ਹੰਕਾਰ ਵਾਲੀ ਗਲ ਯਾਦ ਆ ਗਈ। ਪੀਰ ਪਾਠੀਏ ਪਾਠੀ ਹੋ ਗਏ। ਕੋਈ ਗਲ ਨਾਂ ਆਉਂਦੀ। ਸ਼ਰਮਿੰਦੇ ਹੋਏ ਪੀਰ ਨੇ ਕੁਝ ਮੋੜਦੇ ਹੋਏ ਕੇਹਾ "ਨਹੀਂ, ਨਹੀਂ! ਬਾਬਾ ਜੀ ਇਹ ਤੁਹਾਡਾ ਘੋ ਤੁਹਾਨੂੰ ਹੀ ਮੁਬਾਰਕ। ਉਹ ਤਾਂ ਏਵੇਂ ਹਾਸੇ ਮਖੌਲ ਵਿਚ ਚੰਚਲ ਮੁਰੀਦ ਨੂੰ ਕਹ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ਤੁਹਾਡਾ ਘੋ ਤਾਂ ਜੁਗਾਂ ਜੁਗਾਂ ਤਕ ਅਟਲ ਹੈ।" ਕਹਿੰਦਿਆਂ ਬੜੀ ਹਲੀਮੀ ਨਾਲ ਕੁਝ ਮੋੜ ਦਿੱਤਾ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ "ਏਹੋ ਜੇਹੇ ਹੰਕਾਰ ਵਾਲੇ ਬੋਲ ਤੁਹਾਡੇ ਵਰਗੇ ਦਰਵੇਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਕਦੋਂ ਸੋਭਦੇ ਨੇ। ਮਿਠਾਂ ਜੀ ਵੇਖੋ ਨਾਂ ਵਡੇ ਸਮੁੰਦਰਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਕਿਤੇ ਕਿਤੇ ਛੋਟੇ ਛੋਟੇ ਟਾਪੂ ਵੀ ਬਚੇ ਰਹਿੰਦੇ ਨੇ।"◆

ਪੀਰ ਲਾਜਵਾਬ ਸੀ।

ਇਹ ਪੀਰਾਂ ਦਿਠਾਂ ਆਪਣੀ ਰਮਜਾਂ ਸਨ। ਜਿੰਨਾਂ ਦਾ ਮਤਲਬ ਸੀ: ਪਹਲਾਂ ਜੇਹੜੀ ਪੀਰ ਨੇ ਫੜ ਮਾਰੀ ਸੀ ਕਿ ਸਾਰਾ ਘੋ ਪੀ ਲਵਾਂਗੇ, ਇਸਦਾ ਮਤਲਬ ਕਿ ਨਾਨਕ ਨੇ ਕੁਝ ਲੋਕ ਜੋੜ ਲਏ ਤੇ ਉਹ ਬਾਬੇ ਦੇ ਜਾਣ ਤੋਂ ਬਾਦ ਸਭ ਨੂੰ ਇਸਲਾਮ ਵਿਚ ਜ਼ਬ ਕਰ ਲਿਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਮਤਲਬ ਬਾਬੇ ਦੇ ਚਲਾਨੇ ਤੋਂ ਬਾਦ ਕਿਸੇ ਨੇ ਨਹੀਂ ਬਾਬੇ ਦੇ ਫਿਰਕੇ ਦਾ ਨਾਂ ਲੈਣਾ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਜੋ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ ਉਹਦਾ ਮਤਲਬ ਕਿ ਇਹ ਸਮੁੰਦਰ ਵਿਚ ਟਾਪੂ



ਭਲਾਕੇ ਨਾਨਕਸ਼ਾ ਦਰਸਾਉਣ ਵਾਲੇ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਡੇਰਾ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਦੇ ਡਾਲੇ ਚਕਕ, ਕਰਤਾਰਪੁਰ

◆ ਸੋਢੀ 2-476,
◆ ਸੋਢੀ 2-514 ਨੇ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਤੋਂ ਜੋ ਦੂਰੀ ਦਿੱਤੀ ਹੈ (ਕੋਸ ਪੰਜ ਸੱਤ) ਉਹ ਕਲਾਨੌਰ ਤੇ ਹੀ ਸਹੀ ਬੈਠਦੀ ਹੈ। ਫਿਰ ਕਲਾਨੌਰ ਦੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਤੁਲੀ ਗੋਤ ਦੇ ਖੱਤਰਿਆਂ ਦਾ ਬਹੁਮਤ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਨੇੜੇ ਹੀ ਰਸਤੇ ਵਿਚ 7 ਕਿ. ਮੀ ਤੇ ਪਿੰਡ ਭਗਠਾਨਾ ਤੁਲਿਆਂ ਹੈ। ਜਿਥੇ ਪੁਰਾਣੇ ਖੇਡ ਵੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਖੱਤਰੀ ਨਹੀਂ ਬਚੇ। ਸਭ ਸ਼ਹਰਾਂ ਚ ਵੱਸ ਚੁਕੇ ਹਨ।

◆ ਸੋਢੀ 2-552, ਵ ਸੋਢੀ 2-543, ਸੋਢੀ 2-550, ਸੋਢੀ 2-558,
◆ ਸੋਢੀ 2-569, * ਸੋਢੀ 2-575, ** ਸੋਢੀ 2-590, ਸੋਢੀ 2-594

ਯ ਯ ਸੋਢੀ 2-572, ਨੇ ਇਸ ਸਲੋਕ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਚ ਇਸਨੂੰ ਭਰਾਵਾਂ ਦਾ ਆਪਣੀ ਲੜਾਈ ਝਗੜਾ ਦੱਸਿਆ ਹੈ। ਸੋਢੀ ਨੂੰ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਕ ਭਰਾ ਨੇ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਪੈਸੇ ਮਾਰ ਲਏ ਹਨ। ਪਰ ਜੇ ਗੈਰ ਨਾਲ ਵੇਖੋ ਤਾਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗਲ ਕੁਝ ਹੋਰ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਸ਼ਬਦ ਵਿਚ ਸਾਫ ਆਇਆ ਹੈ, "ਦੁਨਿਆ ਕਾਰਨਿ ਦੀਨੁ ਗਵਾਧ ਆ॥" ਜਿਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਨੇ ਆਪਣਾ ਨਕ ਰਕ਼ਨ ਜਾਂ ਲੋਕ ਲਾਜ ਖਾਤਰ ਕੋਈ ਪਾਪ/ਗੁਨਾਹ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਖ਼ੂਨ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੀ ਵੀ ਪ੍ਰਵਾਹ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਅਜੇਹਾ ਗੁਨਾਹ ਜਿਸ ਵਿਚ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਵੀ ਤਾੜ ਤਾੜ ਕੀਤਾ ਤੇ ਰੱਬ ਦੀ ਦਰਗਾਹ ਵਿਚ ਵੀ ਕਸੂਰਵਾਰ ਠਹਰਾਏ ਜਾਣਗੇ। ਅਜੇਹਾ ਗੁਨਾਹ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਜਟ ਗੁਪਤ ਪ੍ਰੇਮ ਸੰਬੰਧਾਂ (ਚੋਰੀ ਯਾਰੀ) ਦੇ ਨੰਗਾ ਹੋਣ ਤੇ ਹੀ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਕਦੀ ਨਜਾਯਜ਼ ਸੰਬੰਧ ਕਰਕੇ ਘਰਵਾਲੀ ਵੀ ਮਾਰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਇਥੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਖ਼ੂਨ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੀ ਗਲ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਜੋ ਸਿਰਫ ਧੀ ਭੈਣ ਹੀ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।



ਪਿੰਡ ਡਾਲੇਚਕਕ ਦਾ ਗੁਰੂ ਦੀ ਆਮਦ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਸਾਹਬ। ਹੇਠਾਂ ਪੀਰ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਦੀ ਮਜ਼ਾਰ ਦੇ ਬਾਹਰ ਬੋਹੜ ਦਾ ਪੁਰਾਤਨ ਰੁਕ਼।

ਬਰਕਰਾਰ ਰਹਨਦੇ ਹਨ ਏਸੇ ਤਰਾਂ ਸਿਕ਼ਖੀ ਦੇ ਟਾਪੂ ਵੀ ਇਸਲਾਮ ਜਾਂ ਹਿੰਦੂ ਧਰਮ ਦੇ ਮਹਾਂ ਸਾਗਰਾਂ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਰਹਿਣਗੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੋਰੀਆਂ ਨਹੀਂ ਹਿਲਾ ਸਕੇਗਾ।

ਲਗ ਪਗ ਹਫਤਾ भर ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਕੋਲ ਹੀ ਰਹੇ। ਬੜੇ ਕੌਤਕ ਕੀਤੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਪੀਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਬਿਲਕੁਲ ਖਾਲੀ ਹੋਆ ਮਹਸੂਸ ਕਰ ਰੇਹਾ ਸੀ। ਪੀਰ ਆਖਿਰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਅਗੇ ਪੂਰੀ ਤਰਾਂ ਵਿਚ ਗਯਾ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕੇਹਾ ਕਿ ਨਹੀਂ ਤੁਸੀਂ ਇਸਲਾਮ ਵਿਚ ਹੀ ਸੌਂਭਦੇ ਹੋ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਕਿਸੇ ਦਾ ਧਰਮ ਤਬਦੀਲ ਨਹੀਂ ਸਨ ਕਰਦੇ।

ਮਿਠਿਆਂ ਮਿਠੇ ਦਾ ਕਠਯਾਲਾ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਵੀ ਪੀਰ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਦਾ ਟਿਕਾਨਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਹ ਪਿੰਡ ਡੇਰਾ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ - ਫਤਹਗੜ੍ਹ ਚੜ੍ਹਿਆਂ ਸੜਕ ਅੜ੍ਹਾ ਰਾਮਾ ਤਲਵੰਡੀ ਤੋਂ ਕਿਲੋ ਮੀਟਰ ਲਹਨਦੇ ਪਾਸੇ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਜਦੋਂ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਤੋਂ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਨੂੰ ਪਰਤੇ ਤਾਂ ਪੀਰ ਕਠਯਾਲੇ ਆ ਗਯਾ। ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਤੋਂ ਕਠਯਾਲਾ 13 ਕਿ. ਮੀ. ਲਹਨਦੇ ਵਿਚ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਕਿ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਤੋਂ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਦਕ਼ਖਨ ਵਿਚ 22 ਕਿ. ਮੀ. ਹੈ।

ਏਸੇ ਪੀਰ ਦਾ ਚੇਲਾ 'ਮਿਠਾ' ਨਾਂ ਦਾ ਸ਼ਾਲ ਖੱਤਰੀ (ਦੇਹਾਂਤ 1601 ਈ ਹੋਆ ਹੈ।) ਪੀਰ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ ਜਦੋਂ ਆਪਣੇ ਡੇਰੇ ਪਹੁੰਚਿਆ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਰੰਗ ਫੰਗ ਕੁਝ ਵਕ਼ਖਰਾ ਹੀ ਸੀ। ਚੇਲਾ ਪੀਰ ਨੂੰ ਵਕ਼ਖਰੇ ਅਨ੍ਦਾਜ਼ ਵਿਚ ਵੇਖ ਕੇ ਬੋਲ ਉਠਆ, "ਪੀਰ ਜੀ ਕੀ ਗਲ ਹੈ ਅਜ਼ ਬੜੇ ਰੰਗ ਵਿਚ ਨਜ਼ਰ ਆ ਰਹੇ ਹੋ?" ਪੀਰ ਨੇ ਦਸ਼ਿਆ ਕਿ 'ਮੈਨੂੰ ਬਾਬੇ ਨਾਨਕ ਦੀ ਸੰਗਤ ਕਰਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਿਆ। ਬਾਬਾ ਜੀ ਖੁਦ ਹੀ ਚਲ ਕੇ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਆ ਗਏ ਸਨ।'

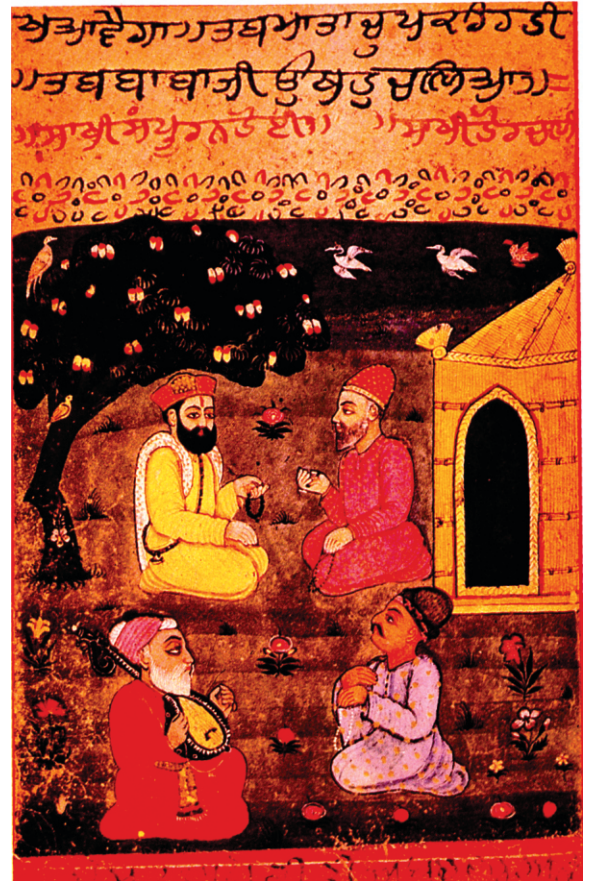
ਪੀਰ ਨੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੀ ਏਨੀ ਉਸਤਤ ਕੀਤੀ ਕਿ ਚੇਲੇ ਦਾ ਮਨ ਵੀ ਕਰ ਆਆ ਕਿ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਾਂ। ਉਹ ਵੀ ਇਕ ਦਿਨ ਕਠਯਾਲੇ ਤੋਂ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਸਾਹਬ ਚਲਾ ਗਯਾ।

ਜਦੋਂ ਮਿਠਿਆਂ ਮਿਠਾ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਸੰਗਤ ਕਰ ਰੇਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਇਕ ਮੌਕੇ ਕੀਰਤਨਿਆਂ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਲਾਯਆ: ਸਿਰੀਰਾਗੁ ਮਹਲਾ 1
॥ ਕੋਟਿ ਕੋਟੀ ਮੇਰੀ ਆਰਜਾ ਪਵਨੁ ਪਿਯਨੁ ਅਘਾਤ ॥ ਚੰਦੁ ਸੁਰਜੁ ਟੁਝ ਗੁਫੈ ਨ ਦੇਖਾ ਸੁਪਨੈ ਸਤਨ ਨ ਥਾਤ ॥ ਭੀ ਤੇਰੀ ਕੀਮਤਿ ਨਾ ਪਵੈ ਹੁਤ ਕੇਵਡੁ ਆਖਾ ਨਾਤ ॥ (ਪੂਰਾ ਸ਼ਬਦ ਸਫਾ 59 ਤੇ ਵੇਖੋ)

ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਅਕਸਰ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਗਾਯਆ ਜਾਂਦਾ ਹੁੰਦਾ ਸੀ ਤੇ ਸਾਰੀ ਸੰਗਤ ਝੂਮ ਉਠਆ ਕਰਦੀ ਸੀ। ਮਿਠਿਆਂ ਮਿਠਾ ਹੈਰਾਨ ਸੀ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਸਿਕ਼ਖ ਸੰਗਤਾਂ ਰੰਗ ਵਿਚ ਆ ਗਈਆਂ ਸਨ।

ਪਰ ਜਿਵੇਂ ਮਿਠੇ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਅਗਲੇ ਬੋਲ ਸੁਣੇ, "ਪੰਥੀ ਹੋਝੈ ਕੈ ਜੇ ਭਵਾ ਸੈ ਅਸਮਾਨੀ ਜਾਤ ॥" ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਗੁਸ਼ਾ ਆ ਗਯਾ ਕਿ 'ਸਿਕ਼ਖ ਇਹ ਕੀ ਕੁਫਰ ਬੋਲ ਰਹੇ ਨੇ, ਸੀ ਅਸਮਾਨੀ ਜਾਨ ਦਾ। ਜਦੋਂ ਕਿ ਸਭ ਦੁਨਿਆਂ ਜਾਨਦੀ ਹੈ ਕਿ ਅਸਮਾਨ ਸਿਰਫ 7 ਨੇ ਤੇ ਪਤਾਲ ਵੀ 7 ਨੇ।'

ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਤੋਂ ਬਾਦ ਮਿਠੇ ਨੇ ਸੰਗਤ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਮੋਹਤਬਰ ਸਿਕ਼ਖ ਨਾਲ ਗਲ ਕੀਤੀ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਆਹ ਕੀ ਗਾ ਰਹੇ ਸੋ 100 ਅਸਮਾਨਾਂ ਵਾਲੀ ਗਲ। ਸਿਕ਼ਖ ਨੇ ਮਿਠੇ ਨੂੰ ਸਮਝਾਯਆ ਕਿ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਮਨਨਾ ਹੈ ਕਿ ਅਕਾਲ ਪੁਰਖ ਦੀ ਸ਼ਿਸ਼ਟੀ ਅਥਾਹ ਅਤੇ ਅਨੰਤ ਹੈ, ਅਨੇਕਾਂ ਹੀ



ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ, ਪੀਰ ਅਬਦੁਲ ਰਹਮਾਨ, ਭਾਧੀ ਮਰਦਾਨਾ ਅਤੇ ਮਿਠਿਆਂ ਮਿਠਾ। ਭੀ:40 ਤਸਵੀਰ। ਇਤਹਾਸਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਤਸਵੀਰ ਵਿਚ ਗਲਤੀ ਹੈ। ਕਯੁਕਿ ਪੀਰ ਜੀ ਨਾਲ ਡਾਲੇ ਚਕਕ ਮਿਲਾਪ ਭਾਧੀ ਮਰਦਾਨੇ ਦੇ ਚਲਾਨੇ ਤੋਂ ਬਾਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਾਖੀ ਵੇਲੇ ਅਜਿੱਤਾ ਰੰਥਾਵਾ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨਾਲ ਸੀ।

असमान ने अनेकां ही पाताल ने। मिट्टा कहन लगा कि दुनियां दे सारे फलसफे मन्नदे हन कि असमान 7 हन फिर तुसी इह कुफर क्यो तोलदे हो। इस ते मिट्टे अते गुरसिक्ख विच कुझ कहा सुनी हो गई। मिट्टा मूंह लवेट के कठ्याले परत आया।

आ के आपने पीर अगगे शकायत कीती कि जिथे तुसी मैनु भेज्या उह तां झूठे लोक ने। सारी गल दस्सी। इस ते पीर अबदुल रहमान ने मिट्टे नूं समझायआ कि 'मिट्टा जे किसे दी पहुंच 7 असमानां तक सी तां उस ने 7 दस्से ने जे कोयी सैकड़े जां बेअंत असमानां तक पहुंच सक्या है तां उस ने बेअंत दस्से ने। सो इस गल विच कोयी झूठा जा सच्चा नहीं। गुरू साहब ने सिसशटी अनंत पायी है।'

पीर ने मिट्टे नूं केहा कि तूं गुनाह कर आया है जेहड़ा उथे सिक्ख नाल झगड़ के आया हैं। तैनुं नही अहसास गुरू साहब खुदा दा रूप ने। चल मेरे नाल तैनुं उस घर तों बखशवा के ल्याउदा हां।

पीर ते मिट्टा फिर अगले दिन करतारपुर पहुंचे। गुरू



मियां मिट्टे दा कठ्याला। सज्जे पासे निमाना जेहा गुरदुआरा जित्थे यादगारी मंजी साहब (थड़ा) मौजूद है। (खब्बे) कारसेवा बाबे ने जिद्द विच आ के उसायां शानदार सथान। सज्जे उह बोहड़ जिस नूं वड्डन लई कारसेवा बाबा जिद्द कर रेहा सी। (♦ वेखो पैड़ सफा।) इस पिंड दे लोक मुबारकबाद दे पातर हन जित्रां नूं पुरातत अते वातावरन नाल प्रेम है। याद रहे सिक्खी दा कारसेवा सिधांत बिलकुल निवेकला, पवित्र अते इनकलाबी है पर बदकिसमती नाल अज्ज कारसेवा नूं कुझ गुरबानी नितनेम तों सक्खने वपारी किसम दे नकली बाब्यां ने अगवा कर ल्या है। जो साडियां इतहासिक यादगारां मिटायी जा रहे ने। पिच्छे जेहे इहनां ने अमृतसर दा किला लोह गड़ह पूरी तरां खतम कर दिता है। जित्थे छेवे पातशाह ने बेरी दी तोप बना के चलादित्ती सी।

साहब ने बड़े प्यार नाल दोवां नूंजी आया केहा।

गल बात शुरू होयी तां पीर ने आउन दा मकसद दस्स्या। पर मिट्टे ने फिर तिकखे सवाल करने शुरू कर दित्ते। इस ते गुरू साहब दे मूंहो मिट्टे लई कुझ सखत बचन निकल गए। पीर तड़फ उठ्या। उस ने मिट्टे नूं समझायआ कि की कर रेहा तूं मै तैनुं बखशाउन वासते ल्यादा तूं होर गुसताखी करी जा रेहै?

इस ते पीर ने गुरू साहब नूं अरजोयी कीती कि गुरू जी मिट्टा बहुत जग्यासू किसम दा मुरीद है इहनुं बखश घो। इस ते मिट्टा गुरू साहब दे चरनां ते ढह प्या। गुरू साहब ने थापी दित्ती। मिट्टा सारी उमर इसलाम दे दायरे विच रह के ही गुरू साहब दे नाम दा सिधांत प्रचारदा रेहा।

मिट्टे दी कबर एसे पिंड (मियां मिट्टे दे कठ्याले) विच ही है। कबर ते लग्गी तखती मुताबिक मियां मिट्टे दा देहांत 1601 ई विच होया।



कठ्याआला विखे मियां मिट्टे दी कबर अते नाल लग्गी कबर तखती जिस ते लिख्यां है कि शुध मट्टी खां दा देहांत हिन्दसे आबजाद दे नियम मुताबिक सत्र 1601 ई विच होया। (फारसी लेख दा तरजमा कीता मिरजा सफदर बेग ने) (नोट - पता लग्गा है इह कबर तखती पुरातनता दे तसकर इथों चुक्क लिजा चुक्के हन। जदों 550 गुरपुरब मनायआ जा रेहा सी तां पिंडां थावां ते सरकारी मुलाजमां दे भेस विच इह तसकर फिरे। इलाके दे सरपंचां नूं भरोसे विच ले के पुराणियां शेआं चुक्क ले गए। इह कह के कि इनां दी सरकारी नूंमायश सुलतानपुर लोधी विखे लगनी है। इह लोक पुराणियां फिर मोटी कीमते ते वेच दिन्दे हनुं जो बाहर देसी पहुंच जादियां हन। क्युकि पच्छमी मूलकां दे लोक इतहास दे कदरदान हन। पुलिस नूं चाहीदा इस गल दा नोटिस लेवे।

♦ बी:40-135, बी:40-57,

मियां मिट्टे दा कठ्याला नां दे पिंड विच्च अज्ज वी मियां जी दा हुजरा नौ बर नौ अते चंगी हालत विच्च सांभ्या प्या है। इस थां दा सेवादार (मजोर) गुरविन्दर सिंघ नां दा सिक्ख है। गुरविन्दर दा कहना है कि अबदुल रहमान अते मियां मिट्टा गुरू अते चेला सन जदों कि भायी कान सिंघ जेहे लिखारियां नूं टपला लग्गा है जित्रां ने दोवां नूं इक्क इनसान दे रूप विच्च ही पेश कीता है अते लिख दिता कि अबदुल रहमान मिट्टन कोट दे रहन वाले सन। अखे जिस करके उनां नूं मियां मिट्टा केहा जांदा सी। गुरविन्दर अनुसार मियां मिट्टा मूल विच्च पसरूर शहर दे रहन वाले स्याल खतरी सन। इह अरब देसां तों खजूरां ल्याउदे सन भाव सौदागर सन। इक वेरां इहनां दा प्यारा ऊठ दिड्डु विच पीड़ पैन कारन मर गया। जिस दे वैरग विच इह बहुत दुक्खी होए। इस मौके फिर पीर अबदुल रहमान ने इनां नूं म्यान दिता जिस कारन फिर इह दुन्यावी कारोबार छड्डु के पक्का पीर दा मुरीद ही बण गया अते इसलाम कबूल ल्या। इनां ने खुद व्याह नही सी करवायआ। गुरविन्दर अनुसार इह तित्र भन भरा सन। स्याल खतरी अज्ज वी मियां मिट्टा नूं आपना जठेरा करके पूजदे हन।

♦ गुरू साहब पीर बाबा मिट्टा दे तकौए दे उत्तर विच 500 गज्ज दूर खजूरां

दे बाग विच बिराजे सन। जित्थे गुरू साहब शुरू विच्च आ के बैठे उथे गुरदुआरा गोशटि सथान थड़ा साहब मौजूद है। इथे नाल ही इक होर बहुत ही विशाल गुरदुआरा साहब बणाया गया है। इस दी कहानी वी दस्सदी है कि गुरमत तों सक्खने कारसेवा वाले बाबे किवे इतहासिक निशानियां दी प्रवाह नही करदे।

होया कुझ इस तरां कि बाबे ने पिंड निवासियां कोलों मंजी साहब ते सुन्दर गुरदुआरा साहब बणाउन वासते आग्या लै लई। जिवे कार सेवा शुरू होयी बाबे दी सकीम विच इक पुरातन बोहड़ दा रुक्ख आड़े आ गया। बाबा जिवे बोहड़ ते कुहाड़ा चलाउन लग्गा पिंड वाल्यां नूं पता लग्ग गया तां उहनां ने बोहड़ वड्डन तों बाबे नूं मना कर दिता। बाबे ने जिद्द कर लई ते केहा कि बिनां बोहड़ वड्डे उह गुरदुआरा साहब तामीर नही करेगा। बाबा गुस्सा विच आ के कारसेवा ही छड्डु गया।

इस गल विच उज्ज बाबे ने आपनी हेठी समझी अते कुझ चिर बाद उसे सथान लागे किला जमीन बाबे ने खरीदी अते उथे जिद्द विच आ के गुरदुआरा साहब बना दिता। सो इस प्रकार इथे दो असथान बण गए हन।